वर्ष 23 । अंक 7 । फरवरी, 2022

ISSN No. 2582-4546

₹ 30

बच्चों का देश

राष्ट्रीय बाल मासिक

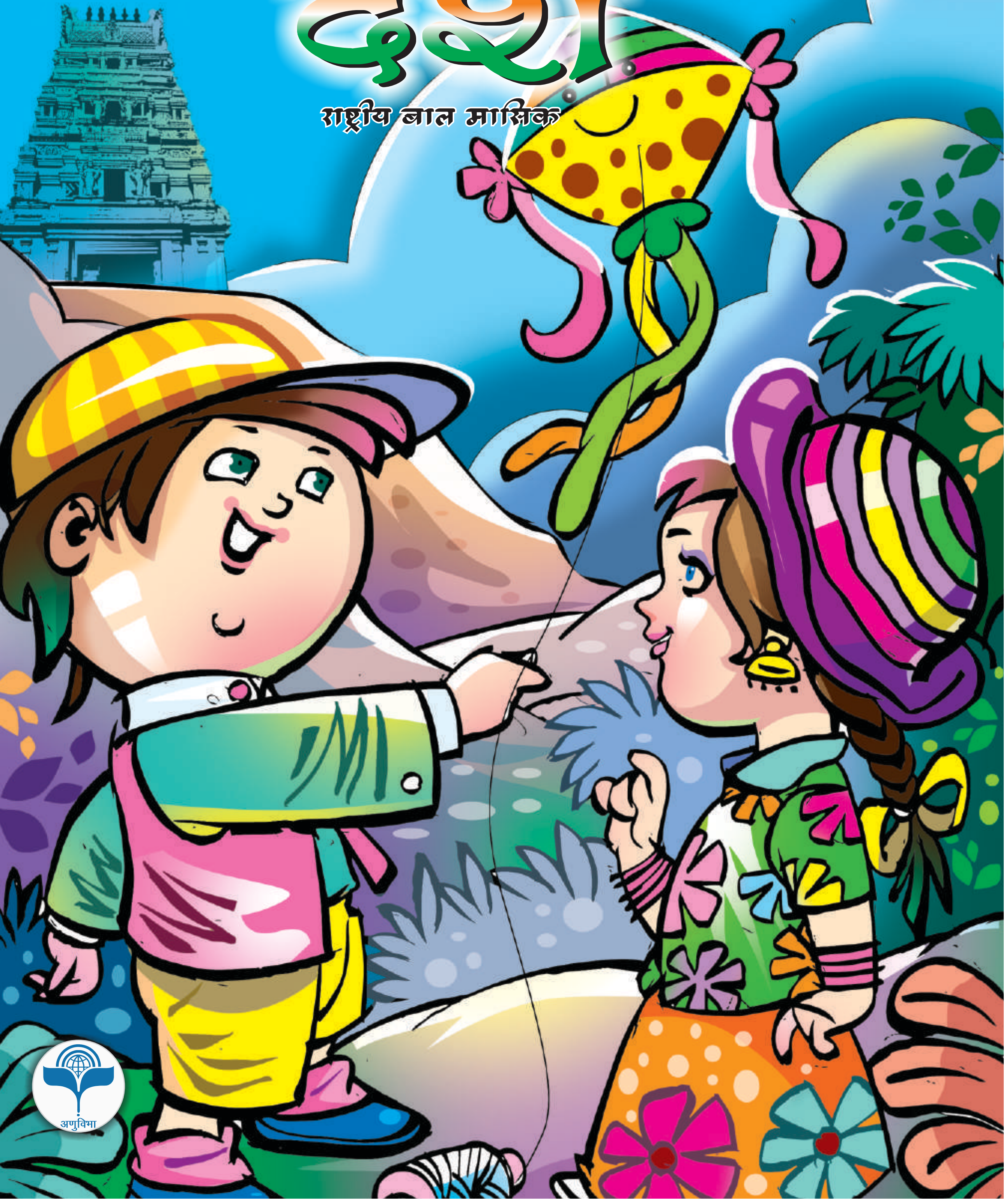

अणुविभा

क्या आप जानते हो ?

बांद्रा-वर्ली सी लिंक ब्रिज, भारत

मुंबई में स्थित यह समुद्र में बना भारत का सबसे लम्बा पुल है। इसमें जितने स्टील के तार लगे हैं उन्हें जोड़ा जाए तो पृथ्वी का पूरा एक चक्कर हो जाए। यह 8 लेन का पुल है जो बांद्रा और वर्ली के बीच खुले समुद्र के ऊपर बना केबल-स्टे फ्रीवे है। इसकी डिजाइन शेषाद्री श्रीनिवास ने तैयार की है। 2009 में शुरू हुए इस पुल को राजीव गांधी सेतु भी कहते हैं।

आकाशी कैक्यो ब्रिज, जापान

जापान का आकाशी कैक्यो ब्रिज दुनिया का सबसे लम्बा सस्पेंशन ब्रिज है। सस्पेंशन ब्रिज यानी झूला पुल जिसमें पुल का वजन लोहे के रस्सों पर लटका होता है। 1998 में तैयार हुआ जापान का यह पुल वैसे तो 3.9 किलोमीटर है लेकिन इसके दोनों खम्भों के बीच की दूरी 1991 मीटर है। इस पूरे ढाँचे का वजन 1,93,200 टन है, और आप जानते ही हैं कि एक टन का मतलब होता है एक हजार किलोग्राम।

गोल्डन गेट ब्रिज, अमेरिका

अमेरिका के सैन फ्रांसिस्को शहर में सैन फ्रांसिस्को खाड़ी के दोनों छोरों को जोड़ने वाला यह झूला पुल है। वर्ष 1937 में जब ये पुल बनकर तैयार हुआ था तब यह दुनिया का सबसे लम्बा झूला पुल था। इसकी कुल लम्बाई 2737 मीटर है। प्रतिदिन एक लाख से भी अधिक वाहन इस पुल से गुजरते हैं। इस ब्रिज को केसरिया रंग से रंगा गया है ताकि कोहरे में भी यह स्पष्ट दिखाई दे सके।

टॉवर ब्रिज, ब्रिटेन

लंदन की थेम्स नदी पर बना यह प्रसिद्ध पुल लंदन की पहचान है। यह एक Bascule Bridge है यानी फोल्डिंग ब्रिज। जब नदी से कोई जहाज गुजरता है तो उसे रास्ता देने के लिए यह बीच से खुल जाता है। 1894 में बना यह पुल आजकल एक साल में लगभग 800 बार खुलता है जबकि अपने पहले वर्ष में जहाजों को रास्ता देने के लिए इसे 6194 बार खोलना पड़ा था।

कहाँ क्या?

अंक विशेष

डॉ. जाकिर हुसैन	: गुडविन मसीह	—	11
होनहार बच्चे : कुशाल	: शिखर चन्द जैन	—	14
अन्तरराष्ट्रीय मातृभाषा दिवस	: प्रमोद दीक्षित मलय	—	26
पक्षियों के पंख	: डॉ. विनोद गुप्ता	—	34
ड्राइवरलेस कार	: डॉ. के.पी. तलेसरा	—	37
हैंडबाल	: अनिल जायसवाल	—	38

कहानी

बाँहों में जीवन	: रजनीकान्त शुक्ल	—	07
हाय सर्दी	: नीलम राकेश	—	09
खेल—खेल में	: अर्चना त्यागी	—	15
बिजली की करें बचत	: कुसुम अग्रवाल	—	19
जीवन की परीक्षा	: डॉ. अलका जैन 'आराधना'	—	22
कौन सबसे धनी	: शैलेन्द्र सरस्वती	—	23
अनोखी सफाई	: इन्द्रजीत कौशिक	—	31
जीत की मुसकान	: प्रदीप कुमार शर्मा	—	35
पुलिस अंकल	: निश्चल	—	39

कविता-गीत

सितारों का मेला	: श्रवण कुमार सेठ	—	06
पँछी बनूँ	: अनिता गंगाधर	—	10
आया बसन्त	: डॉ. सुधा गुप्ता 'अमृता '	—	10
थरथर काँप रहा है हाथी	: शिवचरण चौहान	—	13
हम चाँद पर जाएँगे	: लाल देवेन्द्रकुमार श्रीवास्तव	—	18
यदि पंख लग जाते	: डॉ. मृदुल शर्मा	—	18
रिश्तों का संसार	: डॉ. रामनिवास 'मानव'	—	18
पिता	: रामगोपाल राही	—	30

विविधा

बूझो तो जानें : संतोष कुमार सिंह — 13
वर्ग पहेली : सुधा जौहरी — 17
प्रेरक प्रसंग : पूर्णिमा मित्रा — 25
दिमागी कसरत : प्रकाश तातेड़ — 28
लघु कथा : ईमानदारी : पूरन सरमा — 28
चित्र पहेली : चाँद मोहम्मद घोसी — 33

स्तम्भ

क्या आप जानते हो ? – 2, सम्पादक की पाती –05, महाप्रज्ञ की कथाएँ– 06, जीवन विज्ञान के प्रयोग–08, आओ पढ़ें : नई किताबें – 21, सुडोकू–24, दस सवाल : दस जवाब– 29, प्रेरक वचन, अन्तर ढूँढ़िये – 30, व्हाट्सएप कहानी– 33, , पढ़ो और जानो, उत्तरमाला – 41, कलम और कूँची– 42, नन्हा अखबार – 44, जन्मदिन की बधाई – 46, चित्र कथा–47, किड्स कॉर्नर–50, बच्चों का क्लब : 51

बच्चों का देश

राष्ट्रीय बाल मासिक

वर्ष – 23 अंक –7 फरवरी, 2022

प्रकाशक
अणुव्रत विश्व भारती
सहयोगी संस्थान
भागीरथी सेवा प्रन्यास

सम्पादक | संचय जैन 98290 52452

सह सम्पादक | प्रकाश तातेड़ 93515 52651

प्रबन्ध सम्पादक | निर्मल राँका, पंचशील जैन

कार्यालय | चन्द्रशेखर देराश्री

ग्राफिक डिजायन | गजेन्द्र दाहिमा

चित्रांकन | वेणु वरियाथ

सम्पादकीय कार्यालय

अणुव्रत विश्व भारती (अणुविभा)
चिल्ड्रन'स पीस पैलेस
पोस्ट बॉक्स सं. 28
राजसमन्द – 313324 (राजस्थान)
bachchon_ka_desh@yahoo.co.in
9414343100

सदस्यता शुल्क

एक प्रति	: 30 रु.
वार्षिक	: 300 रु.
त्रैवार्षिक	: 800 रु.
पंचवार्षिक	: 1200 रु.
दस वर्ष	: 2400 रु.
पंद्रह वर्ष	: 7000 रु.

(कोरियर द्वारा 300 रु अतिरिक्त प्रतिवर्ष)
विदेश के लिए वार्षिक शुल्क $ 20

प्रकाशक मुद्रक व सम्पादक

संचय जैन द्वारा अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी, राजसमन्द के लिए प्लेजर डिजिटल प्रेस, 10, गुरु रामदास कॉलोनी, उदयपुर (राज.) से मुद्रित एवं चिल्ड्रन'स पीस पैलेस, राजसमन्द से प्रकाशित

ISSN No. 2582-4546

सदस्यता शुल्क भेजने हेतु -

ANUVRAT VISHWA BHARTI
STATE BANK OF INDIA ADB BRANCH Rajsamand
A/c No. : 51040202830 IFS Code : SBIN 0031308

'बच्चों का देश' मासिक में प्रकाशित रचना व चित्र सहित समस्त सामग्री के प्रकाशन का सर्वाधिकार सुरक्षित है। लिखित अनुमति प्राप्त कर इनका उपयोग किया जा सकता है। समस्त कानूनी मामलों का न्याय क्षेत्र केवल राजसमन्द होगा।

www.anuvibha.org www.bachchonkadesh.com www.facebook.com/bkdpage

सम्पादक की पाती

प्यारे बच्चो,

मनस्वी कमरे की बालकनी में बैठी फुटपाथ पर खेल रहे नन्हे पिल्लों को देख रही थी। एक–दूसरे के साथ मस्ती करते कुत्ते के बच्चे कितने प्यारे लग रहे थे। मनस्वी सोच रही थी कि कितने खुश हैं ये, न पढ़ाई की चिन्ता, न कोरोना का डर, न कोई नियम–कानून... अपने में ही मस्त हैं। उसे पता ही नहीं चला, कब चन्दू चाचा उसके पास आकर बैठ गए थे। जब चाचा ने अपनी हथेलियाँ मनस्वी की आँखों पर रखी तब वह जान पाई और उसका अन्दाज एकदम सही निकला– ''अरे चाचा, आप कब आए ?'' मनस्वी चन्दू चाचा की बहुत लाड़ली है और दोनों की खूब पटती है।

मनस्वी इस वर्ष छठी कक्षा में आ गई है लेकिन सातवीं में कब और कैसे जाएगी उसे पता नहीं... ? कोरोना के चलते स्कूलें कब बन्द होती हैं और कब खुलती हैं, कुछ भी तो पता नहीं। चाचा–भतीजी की बातें इधर–उधर घूमती–घामती कोरोना पर ही आ गई– ''चाचा, देखो ये पिल्ले कितनी मस्ती कर रहे हैं। ये कोरोना केवल इनसानों को ही क्यों होता है आखिर ?'' चाचा कुछ कहते इससे पहले ही मनस्वी ने दूसरा प्रश्न भी दाग दिया– ''और उसमें भी सबसे पहले बच्चों की स्कूलों को ही क्यों बन्द किया जाता है ?''

''बच्चों को अभी वैक्सिन ही कहाँ लगी है ? और फिर...'' मनस्वी के पास सवालों का भंडार है, पूछ बैठी– ''क्यों नहीं लगी बच्चों को ? बच्चों को क्या सबसे पहले नहीं लगनी चाहिए ?'' चाचा मन ही मन सोचने लगे– ''समझाने को तो मनु को मैं समझा दूँगा बातों से, लेकिन इसके सवालों का जवाब कहाँ है मेरे पास ? बच्चों की चिन्ता क्या हम कर पा रहे हैं सही से ? हमारी सरकारें, हमारा समाज, हमारी स्कूलें !'' शायद मनु को भी अपने सवालों की सच्चाई पर भरोसा था, इसीलिए पूरी ताकत से वह सवाल पूछ रही थी– ''बड़ों का क्या ? हर जगह बिना मास्क के पहुँच जाते हैं नेताओं के भाषण सुनने। उन्हें तो कोई रोकता नहीं.... नियम–कानून सब बच्चों के लिए है।''

चाचा ने हाथ पकड़ कर मनस्वी को उठाया और कमरे में ले गए। बोले– ''मनु, तुम्हारी सारी बातें सच हैं। मेरे पास इनका कोई जवाब नहीं है। बस एक बात समझने की है। दुनिया चाहे जो करे, हमें खुद का और अपने परिवार का ध्यान रखना है। अपनी लापरवाही से कोरोना को घर में नहीं आने देना है। अपना रक्षक हमें खुद बनना है। खुद हमें अपने नियम बनाने हैं और खुद ही उनका पालन करना हैं।'' मनु ने चाचा की हाँ में हाँ मिलाई और दोनों एक दूसरे की तरफ देखकर मुसकुरा दिए।

बच्चो ! आपको भी चाचा चन्दू की बात अवश्य सही लगी होगी। अपना ध्यान रखें और कोरोना को हराएँ। हार्दिक शुभकामनाएँ।

आपका ही,

संचय

महाप्रज्ञ की कथाएँ

भावना का करिश्मा

एक आश्रम था। वहाँ अनेक छोटे–बड़े साधक साधना का अभ्यास करते थे। वहाँ एक दंगल (कुश्ती) का आयोजन रखा गया। दो पहलवान आमन्त्रित किए गए– एक तगड़ा और बलिष्ठ था, दूसरा पतला और कम शक्तिशाली था। दंगल प्रारम्भ हुआ। बलिष्ठ पहलवान ने पतले–दुबले पहलवान को हरा दिया।

साधकों के मन में एक विकल्प उठा। उन्होंने पतले पहलवान को सहयोग देना चाहा। कुछ साधक आँख मूँदकर इस भावना में तन्मय हो गए कि इसकी विजय होनी ही चाहिए। यह पतला पहलवान जीतना ही चाहिए। कुछ समय बीता। सबके देखते–देखते दुबले–पतले पहलवान ने अगले दौर में उस तगड़े पहलवान को पछाड़ दिया। वह उसकी छाती पर जा बैठा।

कथा बोध– भावना दूसरों तक भी पहुँचाई जा सकती है। दूसरों पर भी उसका प्रभाव डाला जा सकता है। दूसरों का हृदय–परिवर्तन करना, दूसरों के विचारों को बदलना, ये सारे भावना के प्रयोग हैं।

पद्य कथा

सितारों का मेला

एक रात मेरे सपने में
एक सितारा आया,
आकर बैठा सिरहाने
धीरे से मुझे जगाया।

बोला उसने चलो तुम्हें
तारों की सैर करा दूँ,
मैंने कहा– "नहीं, माँ को
ये पहले बात बता दूँ।"

माँ ने बोला– "जाओ बेटा!
पर जल्दी आ जाना,
कल हिन्दी का इम्तिहान
जल्दी स्कूल है जाना।"

उस तारे ने मुझे पीठ पर
अपने तुरन्त बिठाया,
पलक झपकते मुझको वो
चन्दा पर लेकर आया।

मैंने परियों की रानी के
कान में ऐसा बोला।
नन्हे–नन्हे इन तारों से
भर दो मेरा झोला,

उड़न खटोले में रानी–सी
मेरी हुई विदाई,
और हजारों तारों के संग
मैं घर वापस आई।

वापस आते राह में जिसके
घर था नहीं उजाला,
झिलमिल तारे सजा के मैंने
वहाँ प्रकाश कर डाला।

घर पहुँची तो सभी दोस्तों
में तारों को बाँटा,
गुस्से में थी मईया मेरी
उसने मुझको डाँटा।

इतने में सपनों की चमचम
वह गाड़ी छूट गयी,
सूरज दादा सिरहाने थे
निन्दिया टूट गयी।

श्रवण कुमार सेठ
लखनऊ (उत्तरप्रदेश)

बाँहों में जीवन

सिक्किम राज्य की राजधानी गंगटोक की मुंशी कालोनी में भक्ति प्रसाद शर्मा रहते थे। उनके बेटे विवेक की उम्र साढ़े ग्यारह साल की थी। यह घटना उसके साथ 15 जून 2010 में घटी थी। विवेक उस समय अपने घर के पास की सड़क पर टहल रहा था। अचानक उसने शोर सुना। इस शोर की आवाज ने उसका ध्यान अपनी ओर खींचा। उसने नजर घुमाई तो चिल्लाने वाले जिस ओर इशारा करके चीख रहे थे। उनके साथ ही विवेक की निगाह भी घूम गई। उसने देखा कि उसके ठीक ऊपर की बिल्डिंग की खिड़की से कोई बच्ची नीचे की ओर लटक रही है।

सभी लोग दूर थे और विवेक उस बिल्डिंग के ठीक नीचे था। वे लोग उस बच्ची की ओर सबका ध्यान खींचने के लिए शोर कर रहे थे। कुछ लोग जो विवेक को देख पा रहे थे, उससे उस बच्ची को बचाने के लिए कह रहे थे।

विवेक ने सोच लिया कि यह लड़की अगर सीधी जमीन पर गिरेगी तो मर जाएगी। उसने उसे बचाने के लिए मन बना लिया। सब लोग कह रहे थे और विवेक उसे बचाना भी चाहता था। ऐसे में क्या करना था? वह सोचने लगा। कहीं और से मदद लाई नहीं जा सकती और मिलेगी भी नहीं। जब तक मिलेगी तब तक बड़ी देर हो चुकी होगी।

बस विवेक ने अपना कर्त्तव्य सुनिश्चित कर लिया और दौड़ता हुआ आगे आया। और तो कुछ उसे समझ में नहीं आया पर अब वह उस इमारत के बिलकुल ठीक नीचे अपनी बाँहें फैलाकर खड़ा हो गया। वह लड़की उस समय लगभग सत्रह फीट ऊपर से गिर रही थी। वह लड़की साईप्रिया विवेक के ऊपर आ गिरी। विवेक भी सिर्फ साढ़े ग्यारह साल का था। वह उस गिरने के झटके को नहीं सँभाल सका और वह उसके साथ ही नीचे जमीन पर जा गिरा।

इतनी देर में देखने वाले और चीखने वाले लोग दौड़ते हुए वहाँ आ पहुँचे और उन्होंने उन दोनों बच्चों को उठा लिया। साईप्रिया के शरीर में बाहर से कोई चोट का निशान नहीं दिखाई दे रहा था परन्तु इतनी ऊँचाई से गिरने के कारण वह बेहोश हो चुकी थी। इसलिए घबराहट की वजह से उसके घर के लोग साईप्रिया को लेकर तुरन्त अस्पताल दौड़े।

उधर विवेक को गर्दन, बाँहों और घुटने में बाहरी दिखाई देने वाली चोटें लगी थी। हो सकता है कि उसे कुछ अंदरूनी चोटें भी आईं हो इस बात की जाँच की गई। संयोग से कुछ दिनों के उपचार के बाद दोनों ही बिलकुल स्वस्थ हो गए थे।

विवेक की इस बहादुरी की सभी ने खूब प्रशंसा की। वे कह रहे थे कि विवेक ने तुरन्त बिना समय गँवाए मौके पर सूझबूझ से निर्णय लेकर जो बहादुरी का कार्य किया। उसी की वजह से साईप्रिया

देखें पृष्ठ 13...

जीवन विज्ञान के प्रयोग

तनाव विसर्जन

काम करना और विश्राम करके पुनः शक्ति अर्जित करना, काम और विश्राम का यह एक चक्र है। कार्य कौशल में वृद्धि तभी सम्भव है जब हम कम से कम शक्ति का व्यय करके अधिकतम कार्य का सम्पादन करें और विश्राम में अधिकतम ऊर्जा या शक्ति का अर्जन करें।

अब सोचना यह है कि ऐसे कौन से काम हैं जिनको करके हम अपना कार्य भार बढ़ाते हैं और लाभ के स्थान पर नुकसान होता है। उनका वर्गीकरण हम इस प्रकार से कर सकते हैं–

विद्यालयों में होने वाले तनाव–

1. अनावश्यक झगड़े और आपसी मारपीट। नये छात्रों को परेशान करना अर्थात् रेगिंग।
2. अपनी गलती को छिपाने के लिए झूठ का सहारा।
3. अपनी इच्छा पूर्ति के लिए चोरी का सहारा।
4. पिछले साल की पाठ्य पुस्तकों को नहीं छोड़ना, जबकि इन्हें जरूरतमन्द छात्रों को दिया जा सकता है।
5. अनावश्यक कार्यों में ऊर्जा को खर्च करने से परीक्षा के दिनों में ऊर्जा उपलब्ध नहीं हो पाती और परीक्षा के समय तनाव हो जाता है।
6. शिक्षकों व मित्रों से मन नहीं मिला तो तनाव बढ़ जाता है।

घर पर होने वाले तनाव –

1. बच्चों को बार–बार डाँटना।
2. भाई–भाई के बीच झगड़ने से तनाव।
3. ऐसी आदतें जिनसे दूसरों को कष्ट पहुँचे।
4. घर से पैसे चुरा लेना। झूठ बोलकर दोष को ढकने की कोशिश करना।
5. टी.वी. में मारपीट और अश्लील दृश्यों को देखने से भावों में परिवर्तन हो जाता है और फिर व्यक्ति उसी तरह का अनुकरण करता है। इससे तनाव बढ़ता है।

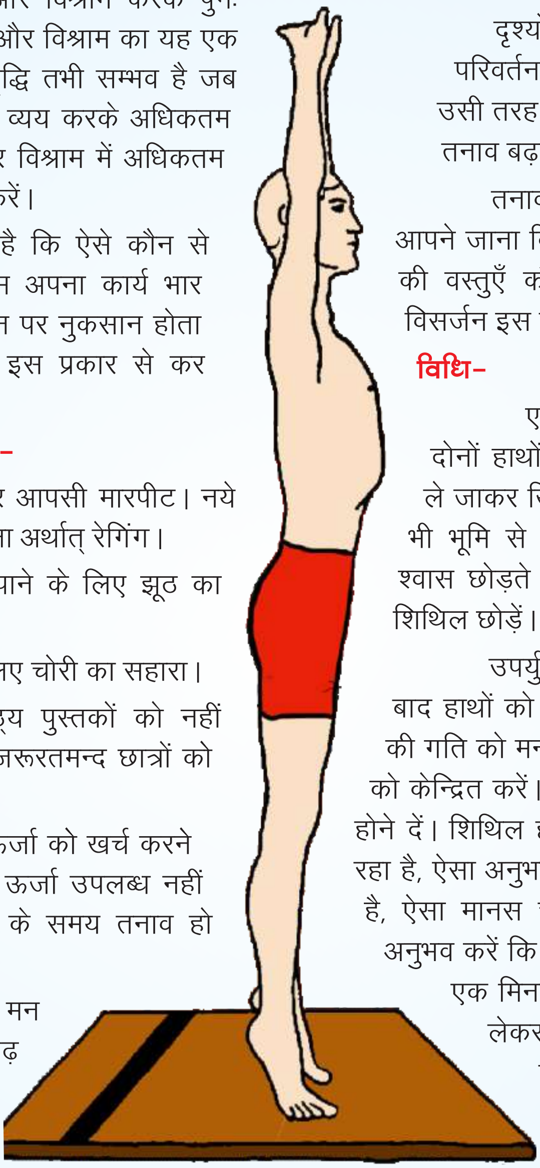

तनाव के भार का वर्गीकरण करके आपने जाना कि तनाव को बढ़ाने वाली व्यर्थ की वस्तुएँ कौन–कौन सी हैं। तनाव का विसर्जन इस प्रकार कर सकते हैं–

विधि–

एकान्त स्थान में खड़े होकर दोनों हाथों को ताड़ासन की तरह ऊपर ले जाकर खिंचाव दें। साथ–साथ पैरों को भी भूमि से ऊपर ले जाकर खिंचाव दें। श्वास छोड़ते हुए शरीर के प्रत्येक अंग को शिथिल छोड़ें। इस प्रकार तीन बार करें।

उपर्युक्त क्रिया तीन बार दोहराने के बाद हाथों को यथास्थिति में ले आएँ। श्वास की गति को मन्द करें। प्रत्येक श्वास पर चित्त को केन्द्रित करें। श्वास को शान्त और शिथिल होने दें। शिथिल होने के बाद शरीर शिथिल हो रहा है, ऐसा अनुभव करें। शरीर शिथिल हो गया है, ऐसा मानस चक्षुओं से साक्षात् करें। फिर अनुभव करें कि शरीर हल्का होता जा रहा है। एक मिनट बाद दाहिने पैर के अँगूठे से लेकर प्रत्येक अवयव को शिथिल होने दें।

इसी तरह क्रमशः ऊपर उठते हुए अनुभव करें कि शरीर की एक–एक कोशिका शिथिल होती जा रही है। जब पूरा शरीर शिथिल हो जाए और श्वास मन्द हो जाए तो एक बार पुनः पूरे शरीर को शिथिल होने दें। शरीर को स्थिर करें, बिलकुल हिले–डुले नहीं।

हाय सर्दी!

नन्हा गोलू ढेर सारे कपड़े पहने, सिर पर टोपी लगाए, लॉन में बैठा हुआ था। वैसे तो गोलू का नाम गुरमीत है। पर सब उसे प्यार से गोलू ही पुकारते हैं। बहुत ही चुलबुला और वाचाल होने के कारण गोलू पूरी कॉलोनी का लाड़ला भी है। जो भी उनके घर के पास से गुजरता गोलू से दो बात जरूर कर लेता। "ए गोलू, तुम अकेले क्यों बैठे हो? सिमरन कहाँ है?" गेट के पास आकर वर्मा आंटी ने पूछा। "मम्मी रसोई में हैं।" दाँत किटकिटाते हुए गोलू बोला। "तुझे तो बहुत सर्दी लग रही है।" वर्मा आंटी ने पूछा। "आंटी, ये बताइए, मुझे ही इतनी ज्यादा सर्दी क्यों लगती है?" भोला सा मुँह बनाकर गोलू ने पूछा।

"हैं! ये क्या बात हुई ? सर्दी है तो सर्दी तो लगेंगी ही।" वर्मा आंटी हाथ नचाकर बोली। "नहीं, मुझे बहुत ज्यादा लगती है।" "अरे गोलू, सबको लगती है। देखो तो, मैंने भी स्वेटर के ऊपर से शॉल ओढ़ा है।" अपने स्वेटर को दिखाते हुए आंटी बोली।

"अरे आंटी, आप मेरे दोस्तों की तरफ देखिए ना। ये कुछ भी नहीं पहनते पर इन्हें सर्दी नहीं लगती।" गोलू जोर देकर बोला। "हैं! ऐसा कौन सा दोस्त है तुम्हारा जिसे सर्दी नहीं लगती ? पर तुम्हारे दोस्त कहाँ है? मुझे तो कोई नहीं दिख रहा।" चारों तरफ नजर घुमाते हुए वर्मा आंटी बोली।

वर्मा आंटी गेट खोलकर अन्दर आ गयी। गोलू के सिर पर हाथ रखकर बोली– "अच्छा गोलू, हमें भी तो मिलवाओ अपने इन दोस्तों से।" "हाँ मिलवा दूँगा। पर आपको दूर से ही मिलना पड़ेगा।''

"आंटी ने सिर हिलाया और बोली– "ठीक है, फिर मुझे मिलवाओ उनसे।" "वो देखिए आंटी, अपनी पूँछ ऊपर उठाएँ मेरी फुदफुद, नीचे आ रही है।" गोलू ने पेड़ की ओर इशारा किया।

"अरे वाह! तुम्हारी दोस्त तो बहुत सुन्दर है। और तुम्हारी छुटकी कहाँ है?" आंटी ने पूछा। "वो थोड़ा डरती है, उधर पत्तियों के पीछे देखिए, छुपकर बैठी है छुटकी चिड़िया।" अपनी अँगुली से गोलू ने इशारा किया।

"देखा ना आंटी आपने, ये कुछ भी नहीं पहनती फिर भी इनको सर्दी नहीं लगती है। पता नहीं क्यों?" गोलू आँखें नचाता हुआ बोला। "गोलू, तुम देख रहे हो इनके शरीर पर जो पंख हैं, ये उनको फूला लेती हैं। इनके पंखों के बीच हवा भर जाती है। यह हवा इनके शरीर की गर्मी को बाहर नहीं निकलने देती, न ही बाहर की ठंडक को इनके शरीर तक पहुँचने देती है। इसलिए तुम्हारे दोस्त सर्दी से अपना बचाव कर पाते हैं। हमारी प्रकृति ने सबको अपने बचाव का साधन दिया है।"

"अच्छा, अब समझा। मेरे पास भी पूरे शरीर पर बालों का घेरा होता तो मैं भी सर्दी से बच जाता, जैसे भालू। है ना आंटी?" भोलेपन से गोलू बोला। गोलू के सिर पर चपत लगाते हुए आंटी बोली– "चल शैतान! इनसानों को सर्दी से बचने के लिए गर्म कपड़े पहनने पड़ते हैं।" अभी आंटी का वाक्य पूरा भी नहीं हो पाया था कि मम्मी गाजर का हलवा ट्रे में रखकर ले आई और बोली– "चलो–चलो, सब लोग पहले गाजर का हलवा खाओ।" "अरे वाह गाजर का हलवा! मजा आ गया। आंटी मेरी सर्दी भाग गई।" कहता हुआ गोलू गाजर का हलवा खाने लगा। मम्मी और आंटी मुग्ध नजरों से उसे देखती रही।

नीलम राकेश
लखनऊ (उत्तरप्रदेश)

पंछी बनूँ

सुबह–सुबह जब आँखें खोली,
सुनी सुरीली मीठी बोली।
विचर रहे थे नील गगन में,
ऊँचे पर्वत और चमन में।

जब भी पंखों को फैलाते,
फर–फर करके वह उड़ जाते।
पंख अगर मेरे आ जायें,
जगह–जगह की सैर करायें।

पंछी बनना मैं भी चाहूँ,
उड़–उड़ के माँ को दिखलाऊँ।
इधर–उधर उड़कर ही जाऊँ,
काम करूँ फिर धूम मचाऊँ।

फिर मैं भीड़ से मुक्ति पाऊँ,
दोस्तों को भी साथ उड़ाऊँ।
तोता भी मैं बनना चाहूँ,
चुन–चुन मीठे फल मैं खाऊँ।

मानव जीवन सबसे उत्तम,
बल बुद्धि से बना जो अनुपम।
और नहीं मुझको कुछ बनना,
जो मिला उसी में खुश रहना।

अनीता गंगाधर
अजमेर (राजस्थान)

आया बसन्त

आ गया ऋतुराज बसन्त,
खुशियाँ छाईं दिग–दिगन्त।

बगिया–बगिया महक उठी,
कलियाँ–कलियाँ चहक उठीं।
दुल्हन तितली शरमाईं,
भौंरों की बारात आईं।
पूजन करते हैं महन्त।...

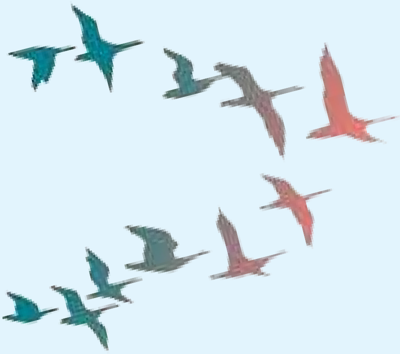

सुन्दर बसन्त ऋतु आई,
कविता रानी मुस्काई।
विद्यार्थी सब विनय करें,
सरस्वती माँ कृपा करें।
अज्ञानता का करें अन्त।...

खिला गुलाब मुस्काया,
किरणों ने कलश सजाया।
जूही चमेली झूम रही,
चम्पा ने नृत्य दिखाया।
कोयल गाता, मस्त बसन्त।...

डॉ. सुधा गुप्ता 'अमृता'
दुर्गापुर (प.बंगाल)

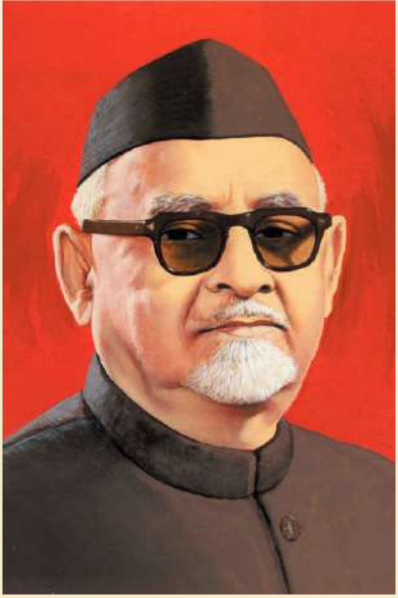

स्वतन्त्रता सेनानी, शिक्षाशास्त्री

डॉ. जाकिर हुसैन

स्वतन्त्र भारत के तीसरे राष्ट्रपति डॉ जाकिर हुसैन भी देश की महान विभूतियों में से एक थे, जिन्होंने 8 फरवरी, 1897 को हैदराबाद, आन्ध्र प्रदेश के एक सम्पन्न पठान परिवार में जन्म लेकर न सिर्फ अपनी माँ की कोख को धन्य कर दिया, बल्कि हैदराबाद की उस पवित्र धरती को भी धन्य कर दिया। उनकी माता का नाम नाजनीन बेगम तथा पिता का नाम फिदा हुसैन खान था। डॉ. हुसैन की माता प्लेग से पीड़ित हुई जिसके चलते सन् 1911 में उनकी मृत्यु हो गयी थी। डॉ जाकिर हुसैन के जन्म के कुछ दिनों बाद ही उनका परिवार, हैदराबाद से उत्तर प्रदेश में आकर बस गया था।

उनकी शिक्षा की बात करें, तो उनको शिक्षा उनके पिता जी से विरासत में मिली थी। उनके पिता कानून के ज्ञाता थे। उन्होंने अपनी आरम्भिक शिक्षा स्थानीय इस्लामिया हाईस्कूल, इटावा में की, उसके बाद कानून की पढ़ाई के लिए अलीगढ–मुस्लिम यूनिवर्सिटी, तत्कालीन एन्गिलो–मुस्लिम ओरिएंटल कॉलेज में दाखिला ले लिया।

आकर्षक व्यक्तित्व के धनी

डॉ जाकिर हुसैन देशभक्त और विचारशील व्यक्ति थे। उन्होंने सदैव समाज व राष्ट्र के लोगों में सामंजस्य बनाए रखा। वह स्पष्टवादी एवं मिलनसार थे। वे सदा कहा करते थे कि उम्मीद पर ही दुनिया टिकी हुई है और हर रात के बाद सवेरा आता है।

वे सादा जीवन और उच्च विचारों के धनी थे। वे निरन्तर सेवा कार्यों में लगे रहे। उन्होंने हर संकट के समय एकजुटता, आत्मविश्वास और मनोबल बढ़ाया। उनमें अद्‌भुत संगठन शक्ति थी। उनके जीवन से हमें हमेशा प्रेरणा मिलती रहेगी।

शिक्षा क्षेत्र के अग्रदूत

डॉ जाकिर हुसैन ने 23 वर्ष की छोटी सी उम्र में ही अपने कुछ सहपाठियों और सहयोगियों के सहयोग से नेशनल मुस्लिम यूनिवर्सिटी जामिया–मिलिया इस्लामिया की आधारशिला रखी। जिसके वह वर्ष 1926 से 1948 तक कुलपति भी रहे। इस बीच वह अपनी उच्च शिक्षा के लिए जर्मनी भी गये थे, जहाँ से उन्होंने अर्थशास्त्र विषय को लेकर अपनी पीएच डी की उपाधि पूरी की।

वर्ष 1927 में जर्मनी से वापस भारत आने के बाद जब उन्हें पता चला कि उनकी खड़ी की जामिया–मिलिया यूनिवर्सिटी बन्द होने के कगार पर है, तो उन्हें बहुत दुःख हुआ। परिणामस्वरूप उन्होंने यूनिवर्सिटी को सुचारु रूप से चलाने और उसका कायाकल्प करने की गरज से संचालन पूरी तरह से अपने हाथ में ले लिया।

उन्होंने आने वाले 20 सालों तक इस संस्थान को जो ब्रिटिश अधीन भारत को स्वराज दिलाने के लिए संघर्षरत था, को उच्च कोटि की दक्षता प्रदान की। स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात यूनिवर्सिटी का कुलपति भी डॉ जाकिर हुसैन को ही नियुक्त किया गया था। उन्होंने शिक्षा जगत के लिए अपनी महती भूमिका निभाई।

उपदेश नहीं, उदाहरण

डॉ. जाकिर हुसैन की जिन्दगी की यह एक ऐसी घटना है, जो उनकी महानता को दिखाती है।

डॉ. जाकिर हुसैन एक अनुशासनप्रिय व्यक्ति थे। उन्होंने जामिया मिलिया इस्लामिया विश्वविद्यालय के कुलपति का पद भी सँभाला। इस दौरान वे चाहते थे कि यहाँ के विद्यार्थी अनुशासन और साफ सफाई की तरफ ध्यान दें। इसके लिए उन्होंने नियम बनाया कि सभी विद्यार्थी साफ सुथरे कपड़े तथा जूतों को पॉलिश करके ही विश्वविद्यालय आएँ। लेकिन विद्यार्थी इस बात की ओर ध्यान नहीं देते थे। जिससे विश्वविद्यालय का माहौल बिगड़ता जा रहा था। फिर उन्होंने विद्यार्थियों में सफाई के प्रति जागरूकता फैलाने के लिए नया तरीका काम में लिया।

अगले दिन डॉ. हुसैन खुद विश्वविद्यालय के गेट पर ब्रुश और पॉलिश लेकर बैठ गए तथा विद्यार्थियों के जूते साफ करने लगे। जिससे छात्रों को शर्मिन्दा होना पड़ा तथा उनको अपनी गलती का अहसास हुआ। जिसके बाद उन्होंने डॉ. जाकिर हुसैन जी से माफी भी माँगी और सभी साफ सुथरे कपड़ों तथा जूतों को पॉलिश करके विश्वविद्यालय में आने लगे। विश्वविद्यालय में फिर से अनुशासन स्थापित हो गया।

गौरवशाली राजनीतिक सफर

महात्मा गांधी के निमन्त्रण पर वह प्राथमिक शिक्षा के राष्ट्रीय आयोग के अध्यक्ष भी बनाये गये। जिसकी स्थापना सन् 1937 में स्कूलों के लिए गांधीवादी पाठ्यक्रम तैयार करने के लिए हुई थी। 1956 से 1958 तक वे संयुक्त राष्ट्र शिक्षा विज्ञान और संस्कृति संगठन यूनेस्को की कार्यकारिणी समिति में भी रहे।

जामिया मिलिया से सेवा निवृत्ति के बाद वर्ष 1956 में उन्हें राज्य सभा सदस्य बनाया गया। वर्ष 1957 में उन्हे बिहार राज्य का गवर्नर बना दिया गया। सन् 1962 तक उस पद को उन्होंने सुशोभित किया। उसी वर्ष वह भारत के तीसरे उपराष्ट्रपति के लिए चुने गये और पाँच साल बाद वे काँग्रेस पार्टी के अधिकारिक उम्मीदवार के रूप में भारत के राष्ट्रपति पद के लिए निर्वाचित किये गये।

शिक्षा और राजनीति के क्षेत्र में उनके उत्कृष्ट कार्यों एवं योगदान के लिए डॉ. जाकिर हुसैन को कई सम्मानों से नवाजा गया था, जिनमें मुख्य सम्मान वर्ष 1963 में भारत के सर्वोच्च सम्मान भारत रत्न से सम्मानित होना है। इससे पहले वर्ष 1954 में उन्हें पद्म विभूषण से भी सम्मानित किया गया।

डॉ. जाकिर हुसैन ने अपने जीवनकाल में बहुत सी उपयोगी पुस्तकों का सृजन भी किया था। उनकी सर्वाधिक चर्चित पुस्तकों में केपेटिलिज्म, स्केल एंड मैथड्स ऑफ इकोनोमिक्स, रिपब्लिक, शहीद की अम्मा और अंधा घोड़ा आदि उनकी काफी चर्चित पुस्तकें थी।

डॉ. जाकिर हुसैन को दिल्ली, कलकत्ता, अलीगढ़, इलाहाबाद और काहिरा विश्वविद्यालय ने डी. लिट्. की मानद उपाधि से भी विभूषित किया था। उन्होंने राजनीति व शिक्षा के क्षेत्र में अपनी महत्त्वपूर्ण सेवाएँ दी। उनके पास ज्ञान का अपार भंडार था। कोई उनके पास बैठता तो वे उसे इतना ज्ञान देते कि घंटे 2 घंटे कब बीत गए, किसी को पता भी नहीं चलता। उन्होंने जिस पद पर भी कार्य किया, उस पद का गौरव ही बढ़ाया।

सारी दुनिया के साक्षर होने का सपना देखने वाले साहित्य, शिक्षा एवं कला के पुजारी, राजनेता डॉक्टर जाकिर हुसैन 3 मई 1969 को इंदिरा गांधी के प्रधान मंत्रित्व काल में चिरनिद्रा में भले ही सो गये हों लेकिन उनकी धर्मनिरपेक्षता, उदारवादिता और व्यवहार कुशलता के सिद्धांतों को कभी नहीं भुलाया जायेगा। डॉ. जाकिर हुसैन भारत के ऐसे प्रथम राष्ट्रपति थे, जिनका आकस्मिक निधन उनके कार्यकाल के दौरान, उन्हीं के आफिस में हुआ था और उनको जामिया मिलिया इस्लामिया के प्रांगण में ही दफनाया गया था।

गुडविन मसीह
बरेली (उत्तरप्रदेश)

बूझो तो जानें

1

बहु रंगों में फूल सुगंधित,
खिलता कंटक ओट कर।
नेहरू और कलाम लगाते,
अपनी जैकिट, कोट पर।

2

रंग पीला हो, नारंगी भी,
फूल बड़ा हूँ, छोटा भी।
करो सजावट, माला पहनो,
गुजराती गलगोटा भी।

3

रहती नहीं महल में लेकिन,
दुनिया कहती मुझको रानी।
महक बिखेरूँ सदा रात को,
नाम बताओ, कर पहचानी।

4

श्वेत फूल हूँ, बहुत सुगंधित,
माला, गजरा सदा बनाते।
कहो कौन मैं, इत्र बनाकर,
लोग वस्त्र भी हैं महकाते?

5

ओढ़ के आती पीली चादर।
सभी कृषक करते हैं आदर।
ऋतु बसन्त में करती खेल।
मेरे बीज से पाएँ तेल।।

संतोष कुमार सिंह
मथुरा (उत्तरप्रदेश)

उत्तर इसी अंक में

'बाँहों में जीवन' पृष्ठ 7 का शेष....

की जान बच सकी नहीं तो उसके प्राण बचना असम्भव था। विवेक ने देवदूत की तरह से मौके पर तुरन्त पहुँचकर बाँहें फैलाकर साईप्रिया को जीवनदान दिया। यद्यपि कई लोगों ने साईप्रिया को गिरते हुए देखा था मगर वे ऐसी स्थिति में नहीं थे कि साईप्रिया की मदद कर सकें। उन्होंने इशारा किया और उस इशारे को सही समय पर समझकर उचित निर्णय लेकर विवेक ने साईप्रिया की जान बचाई थी।

विवेक की वीरता और सूझबूझ की प्रशंसा सभी ने की और कहा कि विवेक पुरस्कार का हकदार है। उसका नाम पुरस्कार के लिए प्रस्तावित किया गया। विवेक को वर्ष 2010 के राष्ट्रीय बाल वीरता पुरस्कार के लिए चुन लिया गया। उसे गणतन्त्र दिवस के अवसर पर जनवरी 2011 में देश की राजधानी दिल्ली में प्रधानमन्त्री जी द्वारा यह पुरस्कार प्रदान किया गया।

रजनीकान्त शुक्ल
गाजियाबाद (उत्तरप्रदेश)

थरथर काँप रहा है हाथी

थरथर काँप रहा है हाथी
ठिठुर रहे हैं बन्दर जी !
नहीं गुफा से बाहर निकला
शेर घुसा है अन्दर जी !!
खों खों खों कर रही लोमड़ी
सियार कर रहा हुआ हुआ !

कूं कू कुं कू कुत्ता बोले
करे भेड़िया बुआ बुआ !!
भालू, चीता, हिरन, बिलौटा
गर्दभ, साही, चिंकारा !
इस जाड़े में काँप रहा है
जंगल सारा का सारा !!

शिवचरण चौहान, कानपुर देहात (उत्तरप्रदेश)

कुशाल ने बनाए 13 मोबाइल ऐप

दोस्तो! प्रतिभा, कार्य क्षमता और सीखने की कोई सीमा नहीं होती। यह प्रमाणित किया है मुम्बई में जन्में 11 साल के कुशाल खैरमानी ने। इतनी सी उम्र में उसने 13 मोबाइल ऐप बना लिये, एक किताब लिख डाली, अपना यूट्यूब चैनल बना लिया और 100 से ज्यादा कोर्स सर्टिफिकेट हासिल कर लिये हैं।

क्लास 6 के विद्यार्थी कुशाल के आदर्श हैं एलन मस्क। वह दुनिया की सबसे अच्छी कार बनाने की चाहत रखता है। छोटी उम्र में बड़ी सोच रखने वाला कुशाल कम से कम 10000 बच्चों को बड़ी और सकारात्मक सोच के लिए प्रेरित करना चाहता है। इसके लिए उसके मन में यूट्यूब चैनल के साथ–साथ सेमिनार और वेबीनार करने की योजना भी है।

छोटी सी उम्र में ही कुशाल ने दुनिया के 6 देशों की यात्रा कर ली और वहाँ की संस्कृतियाँ, लोगों के स्वभाव, तकनीकी विकास को समझने की कोशिश की है। इसी से उसकी सोच का दायरा बढ़ा और वह आज इस मुकाम पर पहुँच गया।

कुशाल ने कोविड–19 के दौरान अपने शिक्षकों को डिजिटल लर्निंग मेथड से जूझते देखा तो उनकी मदद के लिए ऑन कॉल सपोर्ट सिस्टम बनाया। इसके माध्यम से उसने 40 दिनों में उनके लिए डिजिटल पढ़ाई को आसान बना दिया। महामारी के पीरियड में ही उसने 100 ऑनलाइन कोर्सेज पूरे कर डाले। अपना यूट्यूब चैनल "ऑल स्पार्क इंफिनिटी" भी उसने इसी दौरान शुरू किया। इस चैनल से वह अपने साथियों को गरीब बच्चों को मुफ्त में पढ़ाने की प्रेरणा भी देता है।

कुशाल ने 6 वर्ष की उम्र में पुणे में सबसे कम उम्र का ताइक्वांडो ब्लैक बेल्ट होल्डर होने का गौरव भी हासिल कर लिया। इसके अलावा वह एक रोबोट प्रेमी, स्केच आर्टिस्ट, रूबिक क्यूब एक्सपर्ट, तैराक, गोल्फ खिलाड़ी और गिटार वादक भी है। उसने अपने हमउम्र साथियों के लिए "11 सीक्रेट टू पॉजिटिव डेवलपमेंट इन स्टूडेंट" नामक पुस्तक भी लिखी है जो उनके लिए बेहद उपयोगी साबित होगी। वह सोशल एंटरप्रेन्योरशिप प्रोग्राम "गुड क्लैप" के साथ भी काम करता है। यहाँ उसने स्पार्क्स एनिमल वेलफेयर कार्यक्रम शुरू किया है। इसमें जंगली जानवरों को रेस्क्यू करवाया जाता है।

वह कार्टून बनाता है, रोबोट बनाता है, वेबसाइट डिजाइन करता है, कारों का स्केच बनाता है। कुशाल के पिता एक आईटी प्रोफेशनल हैं जिन्हें 20 साल का अनुभव है और माँ होममेकर हैं।

शिखरचन्द जैन
कोलकाता (प.बंगाल)

खेल-खेल में

सोनू और गोलू के पिता उन दोनों के बीच की अनबन से बहुत दुःखी थे। गोलू, सोनू से दस साल छोटा था। माता–पिता का उस पर स्नेह थोड़ा अधिक था। सोनू को यह बात बिलकुल पसन्द नहीं थी। वह कहता– "जब से गोलू घर में आया है, तब से सब बदल गए हैं। मेरी ओर किसी का ध्यान ही नहीं जाता है। सब गोलू के आस पास ही घूमते रहते हैं। उसी से हँसते–बोलते हैं। खाने पीने की सब चीजें उसकी पसन्द की ही आती हैं। कपड़े भी उसके लिए ही पहले आते हैं।" मम्मी–पापा उसे समझाते लेकिन वह कहता– "आप मुझे बड़ा और समझदार कहकर चुप करा देते हैं। गोलू के लाड़ लड़ाते रहते हैं।" इसी सोच के चलते गोलू से उसकी नफरत बढ़ती जा रही थी।

सोनू का ध्यान बस इसी बात पर रहता कि गोलू कोई ग़लती करे और सोनू मम्मी पापा से उसकी शिकायत करे। गोलू को कभी डाँट पड़ जाती तो सोनू खुश हो जाता। सोनू के मम्मी–पापा उसे समझाने की पूरी कोशिश करते– "बेटा, गोलू घर में सबसे छोटा है इसलिए सबको उससे लगाव अधिक है। ऐसा बिलकुल नहीं है कि तुम से किसी को प्यार नहीं है। तुम गोलू से दस साल बड़े हो इसलिए सभी लोग तुम्हें समझदार मानते हैं।" लेकिन सोनू के मन में जो बात बैठ गई तो बैठ गई।

रोज शाम के समय सोनू पार्क में खेलने जाता था। एक दिन खेलने गया तो रोते चिल्लाते हुए वापस आया। उसके बाएँ हाथ में चोट लगी थी। उसका दोस्त बंटी उसे घर तक छोड़ने आया था। पापा ऑफिस से आए तो तुरन्त ही सोनू को डॉक्टर के पास ले गए। डॉक्टर ने जाँच करके बताया– "हाथ की हड्डी टूट गई है। प्लास्टर लगाना पड़ेगा।" सोनू यह सोचकर दुःखी था कि वह अपने काम ठीक से नहीं कर पाएगा परन्तु अन्दर ही अन्दर वह खुश था। जबसे उसे चोट लगी थी, सबका ध्यान उसकी ओर ही था।

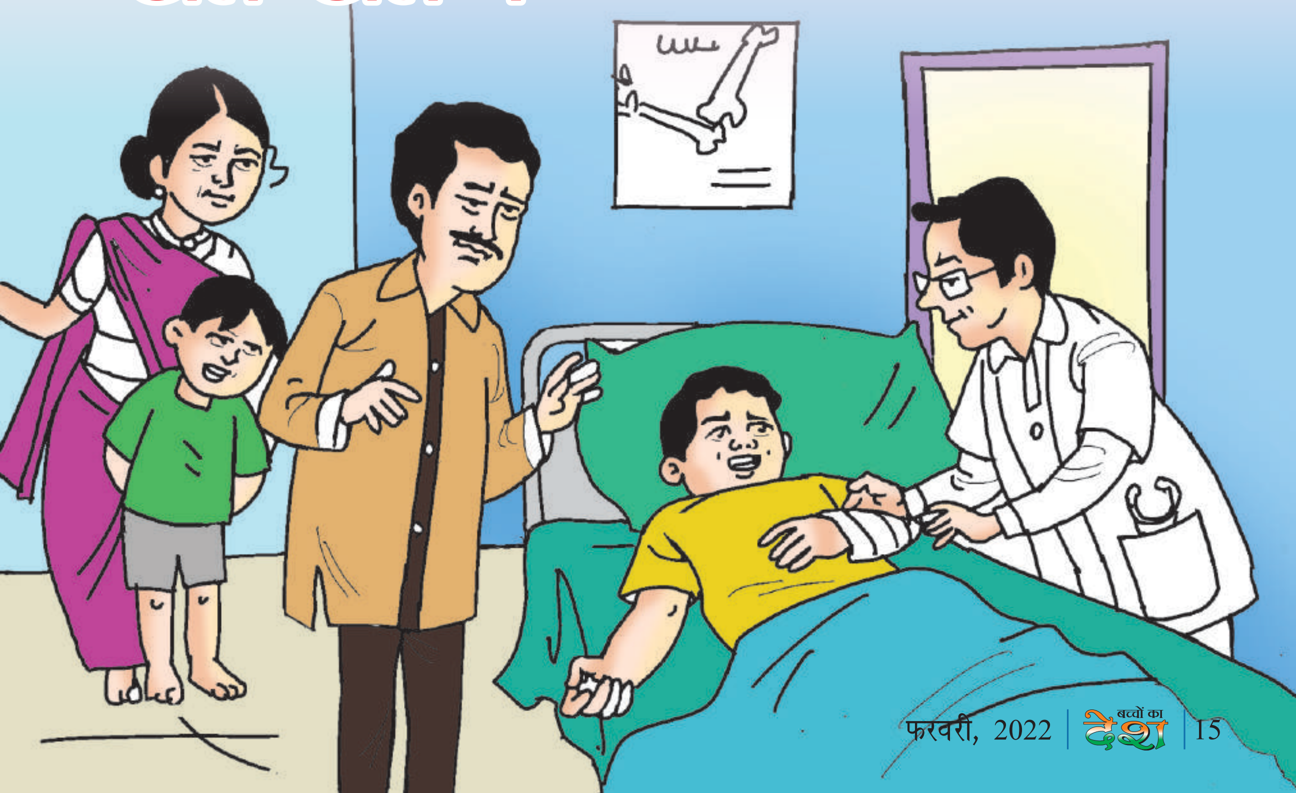

मम्मी–पापा सब भूलकर उसकी सेवा में लगे थे। और तो और गोलू भी उसके पास से नहीं जा रहा था। सोनू को जब प्लास्टर लगा तो गोलू बहुत रोया। गोलू दौड़–दौड़ कर सोनू के सब काम कर रहा था। सोनू मन ही मन सोच रहा था– "रोज इसके काम मुझे करने पड़ते थे, आज इसकी बारी आ गई है। अच्छा ही हुआ।" गोलू ने जिद करके अपनी छोटी सी चारपाई सोनू के पास ही बिछवाई।

"भैया को रात में भी कोई काम होगा तो परेशानी नहीं होगी।" रोज सुबह सोनू से पूछता– "भैया आपने देखा? कितना हाथ ठीक हो गया है?" सोनू को हँसी आ जाती। मम्मी उसे समझाती– "एक महीने बाद ही अब हाथ का पता लगेगा।" दूसरी ओर सोनू एकदम सन्तुष्ट था। वह जैसा चाहता था, वैसा ही हो रहा था। पन्द्रह दिन बीत गए। अब उल्टी गिनती शुरू हो गई थी। गोलू हर रोज़ कैलेंडर से एक तारीख काट देता। पापा–मम्मी भी दिन में एक बार तो तारीख देख ही लेते कि किस तारीख को सोनू का प्लास्टर खुलना है?

अब सोनू की मनोदशा बदल रही थी। वह सोचने लगा था– अगर हाथ नहीं टूटता तो मम्मी–पापा की परेशानी नहीं बढ़ती। मम्मी घर के सारे काम करने के साथ–साथ उसके काम भी करती। जान पहचान वाले हाल चाल पूछने आते रहते थे। उनको भी समय देती। पहले जो छोटे–मोटे काम सोनू कर देता था वो भी उन्हें ही करने पड़ते थे। पापा दिन भर अपने ऑफिस में रहते और रात में जागते हुए ही सोते थे। गोलू अब सोनू के सारे छोटे–छोटे काम कर देता था।

सोनू को अब अपनी सोच पर पछतावा होने लगा था– 'मैं, सबके बारे में कितना गलत सोचता था। जल्दी से प्लास्टर हटे तो सबकी परेशानी खत्म हो। उसके हाथ का प्लास्टर कटने का दिन भी आ गया। जैसे ही प्लास्टर हटा, गोलू खुशी से चिल्लाया। "भैया का हाथ ठीक हो गया।" वह डॉक्टर की सलाह को बहुत ध्यान से सुन रहा था। घर वापस आया तो पापा ने दोनों भाइयों को अपनी गोद में बिठा लिया। दोनों को बाँहों में भरकर बोले– "मेरे दोनों हाथ। रहेंगे साथ–साथ।" सोनू पापा की बात समझ गया। उसने गोलू को गले से लगा लिया और मम्मी–पापा से अपने व्यवहार के लिए माफी माँगी। गोलू धीरे से उसका हाथ छूकर देख रहा था। सोनू की आँखें भर आई– "गोलू मेरे भाई! मुझे पहले समझ क्यूँ नहीं आया कि तू मुझे इतना प्यार करता है। यह हाथ टूटने पर मुझे समझ आया।" गोलू दौड़कर गया और उसका बैट उठा लाया। "चलो भैया खेलते हैं।" सोनू भागकर बॉल उठा लाया और खेल शुरू हो गया।

अर्चना त्यागी
जोधपुर (राजस्थान)

भूल–भूलैया

चाँद मोहम्मद घोसी, मेड़ता सिटी, राजस्थान

वर्ग पहेली

– सुधा जौहरी
जयपुर (राजस्थान)

1		2		3	4	5	
	■		■	6			■
7	8	■	9		■	■	10
11				■	12		
	■	■	13		■	■	
14		15		■	16		
	■		■	■		■	■
17			■	18			

ऊपर से नीचे

(1) पंजाब केसरी (2,4,2)

(2) पक्षी जो तिनके बुन कर लटकता हुआ घोंसला बनाता है (2)

(3) संयुक्त अरब अमीरात का प्रमुख नगर व व्यापार केन्द्र (3)

(4) कार्य में लीन (2)

(5) उर्दू में डाली को कहते हैं (2)

(8) हार (2)

(9) राजस्थान की राजधानी (4)

(10) दूरबीन के आविष्कारक (4)

(15) विष्णु का बौने ब्राह्मण के रूप में अवतार (3)

(16) जर्मनी के पूर्व में यूरोपीय देश (3)

बाएँ से दाएँ

(1) भारत के इन पूर्व प्रधानमन्त्री का नारा था 'जय जवान जय किसान' (2,4,2)

(6) एक जल पक्षी (3)

(7) तिब्बती बौद्ध भिक्षु (2)

(9) एक मोटा अनाज (2)

(11) पानी का तालाब (4)

(12) रंग–बिरंगे सुन्दर पंखों वाली फूलों पर मँडराती है (3)

(13) पहले इस नगर का नाम पूना था (2)

(14) एक अस्त्र (4)

(16) हर छोटे बच्चे को इसके बचाव के लिए बस दो बूँद (3)

(17) प्राचीन काल में उत्तर पश्चिम से आए आक्रमणकारियों को कहते थे (3)

(18) काला पानी वाला द्वीप (4)

उत्तर इसी अंक में

कवि रहीम कहते हैं...

कि कौआ और कोयल रंग में एक समान होते हैं। जब तक ये बोलते नहीं तब तक इनकी पहचान नहीं हो पाती। लेकिन जब बसंत ऋतु आती है तो कोयल की मधुर आवाज से दोनों का अन्तर स्पष्ट हो जाता है।

दोनों रहिमन एक से, जों लों बोलत नाहिं।
जान परत हैं काक पिक, रितु बसंत के माहिं ॥

हम चाँद पर जाएँगे

जेब खर्च के पैसे बचा कर,
हम इक चंद्रयान बनाएँगे।
मम्मी–पापा दीदी संग बैठ,
हम चाँद पर घूमने जाएँगे।

बिस्किट, टॉफी व चॉकलेट,
चंद्रयान में साथ ले जाएँगे।
भूख लगेगी जब भी मुझको,
खूब मौज मस्ती से खाएँगे।

चंद्रयान पर घूम कर हम सब,
वापस अपने घर जब आएँगे।
अगले दिन स्कूल में जा के,
दोस्तों को सब बात बताएँगे।

मैंने स्कूल से आकर पापा से,
अपने मन की यह बात बताई।
बोले, पढ़ने से सब सम्भव बेटा,
पढ़ने लिखने में बहुत भलाई।

लाल देवेन्द्रकुमार श्रीवास्तव
भवानीपुर बस्ती (उत्तरप्रदेश)

यदि पंख लग जाते

पंख हमारे यदि लग जाते,
पल में आसमान छू आते।
उड़ कर यहाँ–वहाँ हम जाते,
हँसते–गाते, धूम मचाते।

चिड़ियों के संग प्रेम बढ़ाते,
नभ में मेघों से बतियाते।
वृक्षों की फुनगी तक जाते,
वहीं बैठ मीठे फल खाते।

वायुयान संग दौड़ लगाते,
कभी हारते, कभी हराते।
दूर देश तक हम हो आते,
पंख हमारे यदि लग जाते।

डॉ. मृदुल शर्मा
लखनऊ (उत्तरप्रदेश)

रिश्तों का संसार

रिश्तों का संसार अनूठा,
हर रिश्ते का प्यार अनूठा।
दादा–दादी, नाना–नानी,
लगते सारे सुखद कहानी।

मात–पिता की बात निराली,
जैसे लदी फलों से डाली।
भैया–बहिना के क्या कहने,
सोना–चाँदी के हैं गहने।

बेटा–बेटी लगते प्यारे,
जैसे सुन्दर चाँद–सितारे।
हर रिश्ते की महिमा न्यारी,
रिश्तों से ही घर फुलवारी।

डॉ. रामनिवास 'मानव'
नारनौल (हरियाणा)

बिजली की करें बचत

पात्र : मोनू (10 वर्ष), अनीता : मोनू की माँ, बिजली के रूप में एक लड़की

दृश्य एक

(पहला दृश्य मोनू के घर का है। मोनू अपने कमरे में बैठा पढ़ रहा है कि उसकी मम्मी की आवाज आती है।)

अनीता : बेटा मोनू, अब जल्दी से तैयार हो जाओ। हमें बाजार जाना है। घर के लिए कई आवश्यक वस्तुएँ खरीदनी हैं तथा कुछ सब्जी–फल भी लाने है।

मोनू : ठीक है माँ। मैं जल्दी से तैयार हो जाता हूँ।

(वह बड़े सलीके से कपड़े पहनता है, बाल बनाता है। मोनू के कमरे में ट्यूबलाइट पंखा और ए.सी. तीनों साधन चल रहे हैं। तैयार होकर मोनू उन्हें चलता ही छोड़कर कमरे से बाहर जाने लगता है कि एक आवाज आती है।)

आवाज : अरे मोनू, कहाँ चल दिए? जाने से पहले तुम्हें मेरा ध्यान तो रखना चाहिए था।

(आवाज सुनकर मोनू चौंकता है और पीछे मुड़कर देखता है। उसने देखा कि एक लड़की, जिसके काले कपड़े पर चमकीला बिजली का संकेत बना है। बिजली के वायर व बल्ब सजे हैं।)

मोनू : (हैरानी से) कौन हो तुम! और मेरे कमरे में कैसे आई? तुम देखने में भी बड़ी अजीब हो। मैंने तुम जैसा प्राणी पहले कभी देखा ही नहीं।

बिजली : तुम मुझे नहीं पहचानते? मैं कोई नई नहीं हूँ। मैं इस कमरे में बरसों से रहती हूँ।"

(मोनू हैरान होकर)

मोनू : तुम मेरे कमरे में रहती हो? पर मैंने तो आज तक तुम्हें नहीं देखा। कहाँ रहती हो तुम? कहाँ सोती हो? बताओ।

बिजली : मैं तुम्हारे कमरे की दीवारों के अन्दर रहती हूँ। मैं सदा चौकन्नी, जागृत अवस्था में ही रहती हूँ ताकि जब भी तुमको मेरी जरूरत पड़े, मैं तुम्हारे काम आ सकूँ।

मोनू : दीवारों के अन्दर रहती हो? मगर कैसे? वहाँ तुम साँस कैसे लेती हो? क्या खाती हो? क्या पीती हो? मुझे कुछ समझ नहीं आ रहा है।

बिजली : (हँसकर) अरे भाई इतना हैरान होने की जरूरत नहीं है। थोड़ा दिमाग पर जोर डाल कर सोचोगे तो तुम्हें पता चल ही जाएगा कि मैं कौन हूँ? मेरी वेशभूषा की ओर ध्यान से देखो। क्या मुझे देखकर तुम्हें कुछ याद आ रहा है?

(मोनू लड़की के कपड़ों की ओर ध्यान से देखता है तथा फिर कहता है।)

मोनू : तुम्हें देखकर लगता है तुम बिजली घर से आई हो।

बिजली : ठीक पहचाना। मैं सचमुच बिजली घर से आई हूँ। (फिर गोल–गोल घूमकर गाती है।)

नाम कई हैं मुझे पुकारो,
बिजली, विद्युत, चंचला।
काम बहुत आती हूँ सबके,
जन–जन का करती भला।
पंखा, कूलर या ए.सी. हो,
मेरे बिना न कोई चला।
हर उद्योग मेरे बल पर ही,
है इतना फूला–फला।

(फिर घूमना बन्द करके बोलती है।)

बिजली : मैं तुम्हारे घर दिन–रात यानी कि चौबीसों घंटे रहती हूँ।

मोनू : (थोड़ा झुँझलाकर) हाँ, हाँ, समझ गया। तुम बिजली हो और मेरे कमरे की दीवारों के अन्दर से गुजर रहे तारों के भीतर रहती हो। ठीक है, रहती हो तो रहो पर अभी मुझे क्यों परेशान कर रही हो? मुझे बाजार जाना है। माँ को देर हो रही है। यदि मैं समय से नहीं गया तो माँ गुस्सा करेगी।

बिजली : मैं तुम्हें बाजार जाने से कब रोक रही हूँ? मैं तो केवल तुम्हें इतना कह रही हूँ कि जाते–जाते पंखा, ट्यूबलाइट और ए.सी. बन्द कर जाओ। इनके व्यर्थ जलने से मेरा दुरुपयोग होता है और जिससे तुम्हारे घर का बिजली का बिल भी अधिक आता है।

मोनू : मुझे बिजली के बिल की परवाह नहीं है। मेरे पापा सरकारी अफसर हैं। यह बंगला हमें सरकार की ओर से मिला हुआ है, इसलिए हमारे सारे बिल भी सरकार अदा करती है। (फिर थोड़ा गुस्से में) जब मेरे मम्मी–पापा मुझे नहीं डाँटते तो तुम मुझे डाँटने वाली कौन होती हो?

बिजली : ठीक है मान लिया कि तुम्हें बिजली का बिल नहीं भरना पड़ता परन्तु व्यर्थ में बिजली जलाने से बहुमूल्य बिजली फालतू जल जाती है। तुम नहीं जानते हमारे राष्ट्र के विकास के लिए बिजली कितनी जरूरी है। बिजली से ही सारी मशीनें, कारखाने आदि चलते हैं। यदि राष्ट्र के सभी नागरिक थोड़ी–थोड़ी बिजली भी बचाएँगे तो उनसे कई मेगावाट बिजली की बचत होगी जिससे गाँव–गाँव में बिजली पहुँचा दी जाएगी। क्या तुम नहीं चाहते हर बच्चा तुम्हारी तरह ही बिजली का उपयोग करें? जैसे तुम्हें गर्मी लगती है उन सबको भी तो गर्मी लगती होगी? जिन लोगों तक बिजली नहीं पहुँच पाती, क्या उनकी परेशानियों के विषय में सोचा है तुमने कभी?

मोनू : हाँ तुम ठीक कहती हो। जब जरूरत नहीं हो तो बिजली के उपकरण बन्द कर देने में ही समझदारी है। मैंने मेरी विज्ञान की पुस्तक में पढ़ा था कि इससे न केवल बिजली की बचत होती है अपितु हमारे उपकरण भी सुरक्षित रहते हैं।

बिजली : हाँ बिलकुल ठीक पढ़ा है तुमने। निरन्तर चलने से विद्युत उपकरणों की मोटर गर्म हो जाती है जिससे उनके खराब होने का खतरा बना रहता है। बिजली के स्विच को भी अनावश्यक रूप से नहीं चलने देना चाहिए। इन्हें बन्द रखकर कई दुर्घटनाओं से भी बचा जा सकता है।

मोनू : बिजली दीदी, मैं तुम्हारी बात बहुत अच्छे से समझ गया हूँ। आगे से मैं इस बात का पूरा ध्यान रखूँगा कि कमरे से बाहर निकलते वक्त मैं बिजली के सभी उपकरण बन्द कर दूँगा।

(बाहर से मोनू की माँ अनीता की आवाज आती है।)

अनीता : मोनू बेटा, जल्दी आओ। मैं कब से तुम्हारा इन्तजार कर रही हूँ ? इतनी देर कैसे लगा दी ?

आओ पढ़ें : नई किताबें

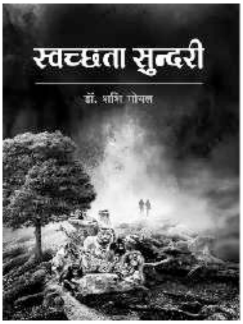

सुन्दर आवरण एवं 16 बाल कहानियों की इस सजिल्द पुस्तक में 12 कहानियों के पात्र जीव–जन्तु है। इन पात्रों के बीच संवाद, घटनाएँ, हाव–भाव आदि का बखूबी चित्रण हुआ है। कहानियाँ आकार में समुचित है। पढ़ने की जिज्ञासा जगाती है। पढ़कर बच्चों को सन्तोष की अनुभूति होगी। उन्हें कहानी का संदेश भी सहज समझ आ सकेगा। पुस्तक का नाम 'स्वच्छता सुन्दरी' इस कहानी में सभी जन्तुओं के घरों की सफाई देखकर अन्त में हिरणी को 'स्वच्छता सुन्दरी' का इनाम मिलता है। इन कहानियों में विविधता व रोचकता का पर्याप्त समावेश है। बाल साहित्यकार डॉ. शशि गोयल की यह किताब स्वागत योग्य है।

पुस्तक का नाम : स्वच्छता सुन्दरी
मूल्य : 250 रुपये
प्रकाशक : जी. एस. पब्लिशर डिस्ट्रीब्युटर्स, दिल्ली

लेखक : डॉ. शशि गोयल
पृष्ठ : 67
संस्करण : 2021

बाल कहानियों की इस पुस्तक में चन्दू और सतू कुम्हार दो मुख्य पात्र है। इनके इर्द–गिर्द विभिन्न रोचक घटनाओं के माध्यम से कहानियों का सटीक ताना–बाना बुना गया है। इन कहानियों की भाषा सरल, संवाद चुटीले है। चित्रों से सजी इन कहानियों को पढ़ने की सहज इच्छा होती है। लघुकथा के सशक्त हस्ताक्षर डॉ. कमल चोपड़ा ने बाल साहित्य में भी बेहतरीन रचना की है। आकर्षक आवरण की इस सजिल्द पुस्तक में बच्चों को लुभाने की पूरी सामग्री है। ये कहानियाँ नैतिक मूल्यों के प्रति चेतना जगाने में सक्षम है।

पुस्तक : चालाकी नहीं चलेगी
मूल्य : 295 रुपए
प्रकाशक : ग्लोबल एक्सचेंज पब्लिशर्स, दिल्ली

लेखक : डॉ. कमल चोपड़ा
पृष्ठ : 72
संस्करण : 2021

मोनू : (बिजली से) अरे! मैं तो भूल ही गया कि मुझे बाजार जाने में देर हो रही है। ठीक है बिजली बहन, अभी मैं चलता हूँ। बाजार से आने के बाद तुमसे फिर मुलाकात होगी।

(कहकर मोनू जाने लगता है कि बिजली बोलती है।)

बिजली : अरे, क्या फिर भूल गए? अभी तो इतना समझाया था।

मोनू : ओ हो! मैं भी कितना भुलक्कड़ हूँ! मुझे याद ही नहीं रहा कि मुझे पंखा, ट्यूबलाइट और ए.सी. बन्द करना है।

(वह तीनों साधन बन्द करता है और फिर अपनी माँ के साथ बाजार जाता है। बिजली मुस्कुरा कर उसे बाय–बाय करती है।)

(पर्दा गिरता है।)

कुसुम अग्रवाल
काँकरोली (राजस्थान)

जीवन की परीक्षा

एक बार राजा वीरसेन की नगरी में भीषण अकाल पड़ा। चारों ओर हाहाकार मच गया। फसलें चौपट हो गईं। प्रजा भूख से मरने लगी। ऐसा लग रहा था मानो कुछ दिन में नगर का नामोनिशान ही मिट जाएगा। राजा वीरसेन अपने नगर को इस संकट से बचाने की पूरी कोशिश कर रहे थे। उसने मित्र राज्यों से अनाज मँगवाया ताकि अपनी प्रजा को भुखमरी से बचा सके लेकिन धीरे–धीरे वह भी समाप्त होने लगा। पानी की कमी ने राजमहल के जीवन को भी संकट में डाल दिया था।

एक दिन राजा चिन्तामग्न होकर अपने कक्ष में टहल रहा था तभी एक साधु उससे मिलने पहुँचे। राजा ने उन्हें प्रणाम किया। राजा ने देखा साधु के चेहरे पर अद्भुत तेज था। उसने हाथ जोड़ते हुए साधु से पूछा– "महात्मन! आप तो सिद्ध पुरुष हैं। त्रिकालदर्शी हैं। कोई ऐसा मार्ग सुझाइए जिससे मैं अपनी प्रजा को इस संकट से उबार सकूँ।" साधु ने मुस्कुराते हुए कहा– "उपाय तो है लेकिन तुमसे नहीं हो पायेगा।" राजा ने विनती करते हुए कहा– "गुरुदेव! आप आदेश कीजिये, मैं अपने नगर को बचाने के लिए अपने प्राण भी न्योछावर कर सकता हूँ।" साधु बोले– "ठीक है राजन! तो सुनो उपाय... तुम्हें अपने इकलौते पुत्र को अपने नगर से बाहर निकालना होगा। उसी के दुर्भाग्य के कारण नगर पर ये संकट आया है।"

साधु की बात सुनकर राजा हक्का–बक्का रह गया। "दुर्भाग्य के कारण पुत्र का त्याग! नहीं महात्मा जी..... ये सम्भव नहीं। मैं अपने प्राण दे दूँगा पर पुत्र को निर्वासित करने के बारे में सोच भी नहीं सकता।" साधु ने कठोर स्वर में कहा– "तुमने सिंहासन ग्रहण करते हुए ये प्रतिज्ञा ली थी कि प्रजा का पुत्रवत् पालन करोगे। तो क्या प्रजा के लिए एक पुत्र का त्याग नहीं कर सकते?" राजा सोच में पड़ गया और उदास रहने लगा। पुत्र से पिता की यह दशा देखी नहीं गई और एक दिन वह नगर को छोड़कर जंगल की ओर चल दिया।

जंगल में कुछ दूर आगे जाने पर उसे एक कुटिया दिखाई दी जिसमें वही साधु बाबा विराजमान थे। राजकुमार ने उन्हें प्रणाम किया। साधु बाबा ने उसे आशीर्वाद दिया– "यशस्वी भवः" राजकुमार ने कहा– "हे मुनिवर! एक बात बताइए क्या मेरे द्वारा राज्य छोड़ देने से अकाल समाप्त हो जाएगा ?" महात्मा जी मुस्कुराते हुए बोले– "बेटा! तुम्हारे भाग्य या दुर्भाग्य से अकाल का कोई सम्बन्ध नहीं... तुम जानते थे कि पिता तुम्हें कभी भी निर्वासित नहीं करेंगे। पर तुमने प्रजा हित को सर्वोपरि मानते हुए अपना राज्य त्याग दिया। तुम इस परीक्षा में सफल हुए। अब कुछ दिन एक साधारण नागरिक के रूप में अपने देश का भ्रमण करो। तुम जीवन की सच्चाइयों से अवगत हो सकोगे। ये एक भावी राजा के लिए प्रशिक्षण होगा। एक साल बाद तुम अपने नगर को लौट जाना और फिर देखना कि तुम्हारा निर्णय सही था या नहीं...।"

राजकुमार जब जिन्दगी की समस्याओं से दो–चार हुआ तो वह आम जनता की परेशानियों को बेहतर ढंग से समझ पाया। जब एक वर्ष बाद वह अपने नगर वापस लौटा तो प्रजा ने अपने भावी राजा का भव्य स्वागत किया और अपने प्रजा हितैषी एवं सेवाभावी पुत्र को गले से लगाते हुए कहा– "मुनिराज ने मुझे सब कुछ बता दिया था। तुम जीवन की परीक्षा में सफल हुए।"

डॉ. अलका जैन 'आराधना'
जयपुर (राजस्थान)

कौन सबसे धनी?

किसी समय जापान के एक गाँव में एक किसान रहता था। किसान के पड़ोस में ही एक व्यापारी रहता था। किसान को जहाँ अपने विशाल खेतों से होने वाली उपज पर अभिमान था, वहीं व्यापारी को अपने व्यापार से अर्जित सोने के सिक्कों पर। एक दिन किसान का बेटा और व्यापारी का बेटा आपस में खेल रहे थे। खेल–खेल में व्यापारी के बेटे ने किसान के बेटे को धक्का देते हुए कहा कि– ''वह उसके साथ खेलने लायक नहीं है, क्योंकि उसका पिता एक किसान है, जो उसके धनी व्यापारी पिता की तुलना में किसी भी तरह से बराबरी का नहीं है।'' यह सुन किसान का बेटा रोते हुए अपने पिता के पास पहुँचा और व्यापारी के बेटे ने जो उसे कहा, वह सब अपने पिता को कह सुनाया।

''असम्भव! व्यापारी किसी भी तरह से मेरी टक्कर का नहीं है। क्या उसके पास मेरी तरह विशाल खेत हैं, जिसमें चावल, सोयाबीन और सूरजमुखी के फूल खिलते हो?'' किसान ने अपने तर्क से बेटे को समझाया तो वह रोना भूल कर खाना खाने बैठ गया। अगले दिन किसान के बेटे ने खेलते समय व्यापारी के बेटे को अपने पिता की बात सुनाई तो वह तत्काल भागता हुआ अपने पिता के पास गया।

''पिताजी, क्या हमारे पड़ोस का किसान आप से भी ज्यादा धनी है, क्योंकि उसके पास बहुत बड़ा खेत हैं, जिसमें चावल, सोयाबीन, सूरजमुखी की बहुत ज्यादा पैदावार होती है!'' व्यापारी के बेटे ने अपने पिता से कहा। ''ऐसा कैसे हो सकता है कि एक गरीब किसान मेरी बराबरी करें!... उसके पास क्या बोरों से भरे सोने के खनखनाते सिक्के हैं। ठहरो! आज मैं तय कर के आता हूँ कि हम दोनों में से कौन ज्यादा धनी है?'' कहते हुए व्यापारी किसान के घर की ओर चल पड़ा।

किसान ने व्यापारी का स्वागत तो किया लेकिन वह उसकी इस बात से कतई सहमत नहीं हुआ कि वह व्यापारी से कम धनी है। इस तरह दोनों घंटों तक अपने–अपने तर्कों से एक–दूसरे से खुद को अधिक धनी साबित करते रहे। अन्त में बातचीत का कोई नतीजा न देखते हुए व्यापारी ने किसान से कहा– ''देखो, मुझे नहीं लगता कि हम आपसी बातचीत से किसी नतीजे पर पहुँच पायेंगे, क्यों न हम राजा के पास चलकर इस बात का निर्णय उसी से करवाते हैं कि हम दोनों में से कौन अधिक धनी है?'' यह सुनकर किसान ने भी आवेश में आकर बिना सोचे–विचारे व्यापारी की बात पर अपनी सहमति दे दी। दोनों में तय हुआ कि अगले दिन बोरों में अपना खलिहानों का समस्त अन्न और व्यापारी व्यापार से अर्जित सोने के सिक्कों से भरे बोरों को अपनी–अपनी बैलगाड़ी में लाद राजा से मिलने जायेंगे।

घर लौट कर जब व्यापारी ने अपनी पत्नी को अगले दिन राजा से मिलने जाने की बात कही तो उसने कोई प्रतिक्रिया नहीं दिखाई लेकिन उधर जब किसान की पत्नी को इसके बारे में पता चला तो वह चिन्तित हो गई। ''राजा का महल तो यहाँ से बहुत दूर है। तुम रास्ते में भूखों मर जाओगे। व्यापारी को नीचा दिखलाने के लिये तुम अपना अनाज भी किसी को नहीं

बेचोगे, यह मैं जानती हूँ...! मुझे ही कुछ करना होगा।''

अगले दिन जब किसान अपने अनाज से भरे बोरों के साथ बैलगाड़ी में बैठ रवाना होने लगा तो उसकी पत्नी ने उसे किसानों के पहनने की एक टोपी और एक घड़ी पकड़ाते हुए कहा– ''देखो, यह टोपी और घड़ी मैंने चावल में नमक और भूनी हुई सूजी मिलाकर बनाई है। रातभर में उबला हुआ और मसला हुआ चावल सूख कर कड़ा हो गया है। अब जब भी तुम्हें भूख लगे तो तुम यह टोपी और घड़ी टुकड़े–टुकड़े कर के खा लेना।'' किसान को यह देख कर बड़ी खुशी हुई कि उसकी समझदार पत्नी ने उसके खाने का प्रबंध कितनी समझदारी से किया है। किसान ने उस अजीबोगरीब टोपी से सिर ढक लिया और घड़ी को अपनी कमीज की जेब से लटका लिया। रास्ते में जब व्यापारी अपनी बैलगाड़ी पर उससे मिला तो वह किसान की अजीब टोपी और घड़ी को देखकर हँस पड़ा।

लम्बी यात्रा के बाद किसान और व्यापारी राजा के महल में पहुँचे। जब राजा को पता चला कि दोनों उससे इस बात का निर्णय करवाने आये हैं कि दोनों में अधिक धनी कौन है तो वह गुस्से से तमतमा उठा। राजा ने दोनों को उनके लाये हुए अनाज और सोने के सिक्कों से भरे बोरों के साथ जेल में डाल दिया। ''अब, जब तक तुम दोनों आपस में ही यह निर्णय नहीं ले लेते कि तुम दोनों में से कौन सबसे अधिक धनी है, तुम दोनों को जेल से मुक्त नहीं किया जायेगा।'' राजा ने दोनों से कहा।

अब तो दोनों जेल में कैद होकर पछताये। सोचा था क्या और क्या हो गया? व्यापारी और किसान का पूरा दिन आपस में तू–तू, मैं–मैं करते हुए बीता। लेकिन ज्योंही रात हुई और दोनों आपसी बहस से थक गये तो दोनों के पेट में चूहे कुलबुलाने लगे। दोनों ने पहरेदारों से खाना माँगा तो पहरेदारों ने यह कहकर उन्हें यह कहकर हैरान कर दिया कि राजा ने उन्हें बिलकुल भी खाना नहीं देने को कहा है।

व्यापारी ने अपने सोने के सिक्कों से भरे बोरों पर नजर डाली, लेकिन इस समय इनका अब कोई मोल नहीं रह गया था। व्यापारी ने यह सोचकर खाना अपने साथ नहीं लिया था कि उसे पूरा यकीन था कि निर्णय उसके ही पक्ष में होगा और तब वह अपनी जीत की खुशी में किसी शानदार जगह खाना खायेगा। उधर किसान ने अब जाकर अपनी टोपी और घड़ी का खयाल आया और उसने मजे से टोपी का एक टुकड़ा तोड़ कर खाना शुरू किया।

''क्या तुम टोपी का कुछ टुकड़ा मुझे भी

सुडोकू

यह अंकों का जापानी खेल है,
इससे बुद्धि का विकास होता है।

सुडोकू खेलना बहुत आसान है। खाली स्थानों को इस प्रकार भरें कि ऊपर से नीचे और बाएँ से दाएँ प्रत्येक पंक्ति एवं प्रत्येक नौ–नौ खानों के वर्ग में 1 से 9 तक अंक केवल एक बार आएँ।

			8					9
	1	9			5	8	3	
	4	3		1				7
4			1	5				3
		2	7		4		1	
	8			9		6		
	7				6	3		
	3			7			8	
9		4	5					1

उत्तर इसी अंक में

खाने को दे सकते हो?'' व्यापारी ने गिड़गिड़ाते हुए किसान से कहा। ''भला मैं तुम्हें क्यों खाने को दूँ? तुम्हारे पास तो ढेरों सोने के सिक्के हैं, तुम उन्हें क्यों नहीं खाते?'' किसान ने व्यापारी पर हँसते हुए कहा।

''मैं तुम्हें एक टुकड़े के बदले तुम चाहो जितने सोने के सिक्के दे सकता हूँ।'' व्यापारी ने किसान से कहा। ''सच में!... तो फिर मैं एक टुकड़े के बदले सौ सोने के सिक्के लूँगा। क्या तुम्हें मंजूर है?'' किसान ने व्यापारी की मजबूरी का फायदा उठाते हुए कहा।

मरता क्या न करता? भूख से बेहाल हुए जा रहे व्यापारी ने किसान की बात मान ली। अब व्यापारी ने जैसे ही टोपी का एक टुकड़ा पूरा किया कि उसकी भूख और भड़क उठी। उसने किसान को पहले से ज्यादा सोने के सिक्के देते हुए दूसरा टुकड़ा माँगा। किसान ने सिक्के लेते हुए व्यापारी के हाथ में टोपी का एक छोटा सा टुकड़ा थमा दिया। इस तरह अपनी भूख मिटाते–मिटाते व्यापारी का जैसे ही पेट भरा कि उसने पाया कि उसका सारा धन किसान के पास चला गया था। अब किसान सोने के सिक्कों से भरे बोरों का मालिक था।

''मेरे खयाल से यह तय हो गया है कि हम में से कौन सबसे धनी है।'' व्यापारी ने लटके मुँह से किसान से कहा। ''तो फिर हमें राजा को बुलाकर यह बात बतानी चाहिये ताकि हम कैद से छूटकर अपने–अपने घरों को जा सके।'' किसान ने खुश होते हुए व्यापारी से कहा।

किसान तथा व्यापारी के कहने पर सैनिक राजा को बुला लाये। राजा ने जब दोनों का फैसला सुना तो मुस्कुराते हुए कहा– ''तुम दोनों ने समय रहते सही फैसला कर लिया वरना जेल में सड़ते मर जाते। मैंने तुम दोनों का घमण्ड तोड़ने के लिये ही जेल में डाला था और साथ ही इस बात का भी आईंदा से ध्यान रखना कि राज के कीमती समय को बरबाद नहीं करना चाहिये।'' राजा के आदेश पर दोनों को तुरन्त जेल से रिहा कर दिया गया।

शैलेंद्र सरस्वती
बीकानेर (राजस्थान)

अद्भुत जिज्ञासा

महात्मा बुद्ध के प्रिय शिष्य आनन्द अत्यन्त निर्भीक और जिज्ञासु प्रवृत्ति के थे। एक बार उनके मन में अद्भुत जिज्ञासा उत्पन्न हुई। उन्होंने अवसर मिलते ही महात्मा बुद्ध से पूछा– ''तथागत। आप सदैव ऊँचे आसन पर बैठकर प्रवचन देते हैं और श्रोता नीचे बैठते हैं। ऐसी विषमता क्यों?''

तथागत मुसकान बिखरते हुए बोले– ''आनन्द, तुमने कभी झरने का जल पिया है?'' आनन्द अवाक् होकर सोचने लगे, उनके इस प्रश्न का झरने से क्या सम्बन्ध? किन्तु वे सौम्य स्वर में बोले– ''हाँ, कई बार पिया है?'' महात्मा बुद्ध ने पूछा– ''तुमने पानी झरने के ऊपर जाकर पिया है या नीचे जहाँ वह गिरता है?'' आनन्द अपनी हँसी दबाकर तटस्थ भाव से बोले– ''ऊँचाई से गिरते हुए झरने का पानी सदैव उसके नीचे जाकर ही पिया जा सकता है।''

महात्मा बुद्ध बोले– ''इसी तरह जिज्ञासु को अपनी तृष्णा रूपी जिज्ञासा को गुरु रूपी झरने के ज्ञानरूपी जल से तृप्त करने के लिए, उनसे नीचे ही खड़ा होना पड़ता है। गुरु को अपने से ऊँचा मानकर ही, उनसे ज्ञानार्जन किया जा सकता है।'' महात्मा बुद्ध का यह कथन आज भी सार्वभौमिक और शाश्वत है। विश्व में जितने भी महापुरुष हुए हैं, उन्होंने अपने गुरुओं से नतमस्तक होकर ही ज्ञान पाया है।

पूर्णिमा मित्रा
बीकानेर (राजस्थान)

20 फरवरी
अंतरराष्ट्रीय मातृभाषा दिवस

जीवन में मिठास घो

मातृभाषा से मानव जीवन में आनन्द का जन्म होता है। यह लोक का अद्वितीय प्रसाद है और अवसाद से मुक्ति का द्वार भी। यह कुछ नया रचने–गुनने और चिन्तन–मनन करने की आधारभूमि है। मातृभाषा में माँ की ममता है।

मातृभाषा है तो जीवन में उमंग, उत्साह की तरंगें हैं। वास्तव में मातृभाषा स्वयं की सहज अभिव्यक्ति और कल्पना के इंद्रधनुषी रंगों को साकार करने का एक सहज माध्यम है। मातृभाषा में कड़ाही में गुड़ बनाने के लिए पक रहे गन्ने के रस की सोंधी सुगंध और मिठास होती है। मातृभाषा में किसी पहाड़ी झरने की मोहक ध्वनि सा सरस सुमधुर संगीत और गतिशीलता होती है।

कोई व्यक्ति भले ही कितने बड़े पद पर पहुँच जाये पर हर्ष, दु:ख, प्रेम और क्रोध के अत्यधिक आवेग में उसके कंठ से सहसा मातृभाषा का स्वर ही फूटता है। यह मातृभाषा ही है जो लोक में रची बसी रहती है। मातृभाषा व्यक्ति के जीवन में माधुर्य एवं लालित्य का रस घोलती है।

मातृभाषा किसे कहते हैं ?

मातृभाषा से आशय किसी बच्चे को उसकी माता से प्राप्त होने वाली भाषा के अर्थ में किया जाता है। मेरे मत में मातृभाषा किसी व्यक्ति के बचपन में उसके परिवेश में कार्य–व्यवहार की वह सामान्य भाषा है जिसमें उसने लोक से सम्पर्क एवं संवाद किया है, भले ही वह उसकी माँ की भाषा से अलग रही हो।

हम कह सकते हैं कि मातृभाषा किसी व्यक्ति की सामाजिक एवं सांस्कृतिक पहचान होती है। मातृभाषा का स्थान वास्तव में कोई दूसरी भाषा कभी भी नहीं ले सकती। इसलिए मातृभाषा को न केवल संरक्षित रखना बल्कि संवर्धित करते हुए अगली पीढ़ी को सौपना हमारी सामाजिक, भाषाई नैतिक जिम्मेदारी है।

मातृभाषा दिवस की पृष्ठभूमि

इस दृष्टि से यूनेस्को द्वारा विश्व भर में 21 फरवरी को अन्तरराष्ट्रीय मातृभाषा दिवस मनाया जाता है। जिसका उद्देश्य भाषाई और सांस्कृतिक विशेषताओं एवं बहुभाषावाद के बारे में वैश्विक जन–जागरूकता को बढ़ावा देना है। वास्तव में मातृभाषा दिवस को बांग्लादेशी विद्यार्थियों की अपनी भाषा की रक्षा के लिए छठे दशक के मध्य में पाकिस्तानी सरकार के विरुद्ध हुए संघर्ष में विजय के उत्सव के रूप में देखा जाना चाहिए, जिन्होंने पाकिस्तान द्वारा 1948 में उर्दू को राष्ट्रभाषा बनाकर पूर्वी पाकिस्तान की बांग्लाभाषी आम जनता पर थोपने के कुटिल प्रयास किया था।

तत्कालीन पाकिस्तानी सरकार ने ढाका विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों एवं सामाजिक कार्यकर्ताओं के इस भाषाई आन्दोलन को बर्बरतापूर्वक कुचलने के लिए हिंसा का सहारा लिया। जिसमें कुछ विद्यार्थी मारे गए, सैकड़ों लापता हुए। अमानवीय काले इतिहास की वह तारीख 21 फरवरी थी। तो विद्याार्थियों के इस अतुल्य बलिदान की स्मृति में सम्पूर्ण बांग्लादेश (तब पूर्वी पाकिस्तान) में प्रतिवर्ष 21 फरवरी को अपनी मातृभाषा बांग्ला को राजकीय आधिकारिक दर्जा देने की माँग के साथ छोटे–बड़े हजारों कार्यक्रम आयोजित किये जाते रहे हैं। आखिरकार 29 फरवरी 1956 को पाकिस्तानी सरकार ने बांग्ला भाषा को दूसरी आधिकारिक राष्ट्रभाषा का दर्जा प्रदान कर दिया।

इसी आधार पर मातृभाषा के संरक्षण एवं संवर्धन के महत्त्व को स्वीकारते हुए यूनेस्को ने 17 नवंबर 1999 को इसकी स्वीकृति देते हुए वर्ष 2000 से इस दिवस को सम्पूर्ण विश्व में मनाने की घोषणा की

लती है मातृभाषा

और तब से आधिकारिक रूप से राष्ट्रसंघ से जुड़े सभी देशों में यह दिवस अपनी मातृभाषा–बोली को स्मरण करने, बचाये रखने एवं अगली पीढ़ी तक पहुँचाये जाने के महत्त्वपूर्ण अवसर के रूप में मनाया जाता है।

पर वर्तमान समय मातृभाषा बोलियों पर संकट का है। दैनिक जीवन में बढ़ते तकनीकी उपकरणों के प्रति मोह, आर्थिक सुदृढता के लिए पलायन करने, मुट्ठी में सिमटती–समाती दुनिया के कारण दैनिक कार्य व्यवहार में मातृभाषा के प्रयोग के अवसर बहुत सीमित हुए हैं।

मातृभाषा की महत्ता

महात्मा गांधी मातृभाषा की पैरवी करते हुए बच्चों के सीखने में विदेशी भाषा का माध्यम उनमें अनावश्यक दबाव, रटने एवं नकल करने की प्रवृत्ति को बढ़ाता है। वह उसकी मौलिकता का हरण कर लेता है। यूरोप में हुए एक शोध से यह तथ्य सामने आया कि जो बच्चे स्कूलों में अँग्रेजी का प्रयोग करते हैं और घरों पर मातृभाषा का प्रयोग करते हैं, वे दूसरे बच्चों की अपेक्षा कहीं अधिक बुद्धिमान और मेधावी होते हैं। भारत के पूर्व राष्ट्रपति अब्दुल कलाम ने कहा था कि मैं अच्छा वैज्ञानिक इसलिए बन सका क्योंकि गणित और विज्ञान की शिक्षा मातृभाषा में प्राप्त की।

संयुक्त राष्ट्रसंघ ने व्यक्ति के विकास में मात्भाषा की भूमिका स्वीकारते हुए 2008 को अंतरराष्ट्रीय भाषा वर्ष घोषित किया। गत वर्ष के आयोजन के थीम विषय ''भाषाओं की कोई सीमा नहीं'' से इस दिवस की गम्भीरता स्पष्ट है। विश्व के कई देशों ने स्मारक बनाकर मातृभाषा के महत्त्व को रेखांकित किया है। जिनमें सिडनी स्थित 'अंतरराष्ट्रीय मातृभाषा दिवस स्मारक' एवं ढाका 'शहीद स्मारक मीनार' प्रेरक एवं उल्लेखनीय है। वास्तव में यह दिवस अपनी मातृभाषा और बोली के सहेजने–संवारने और जन–जीवन में अधिकाधिक व्यवहार करने के संकल्प का दिन है।

एक शोध–सर्वेक्षण के अनुसार विश्व में बोले जाने वाली लगभग 6900 भाषा–बोलियों में से 3000 भाषाएँ मरणासन्न हैं। लगभग प्रतिदिन एक बोली मरने को विवश है। विश्व की सर्वाधिक बोली जाने वाली भाषाएँ केवल 10 हैं जिनमें अंग्रेजी, जापानी, रूसी, बांग्ला, पुर्तगाली, हिन्दी, अरबी, पंजाबी, मंदारिन और स्पेनिश सम्मिलित है। विश्व की कुल आबादी का 60 प्रतिशत केवल 30 प्रमुख भाषा में अपना कार्य व्यवहार सम्पादित करता है। आने वाले तीन–चार दशकों में विश्व की 5000 से अधिक भाषाएँ खत्म होने के कगार पर हैं।

भारत का संदर्भ लें तो 1961 की जनगणना में भारत में 1652 भाषाएँ थी जो अब 1300 के करीब शेष बची हैं और आगामी जनगणना में यह आंकड़ा और नीचे जायेगा, ऐसा माना जा सकता है। भारत में 30 भाषाएँ ऐसी हैं जिनके बोलने वालों की संख्या 10 लाख के आसपास ही है। 7 भाषाएँ ऐसी कि जिनके जानकार एक लाख से ज्यादा नहीं है। 122 भाषाएँ ऐसी हैं जिनके बोलने वालों की संख्या केवल दस हजार ही बची है।

प्रमोद दीक्षित मलय
बांदा (उत्तरप्रदेश)

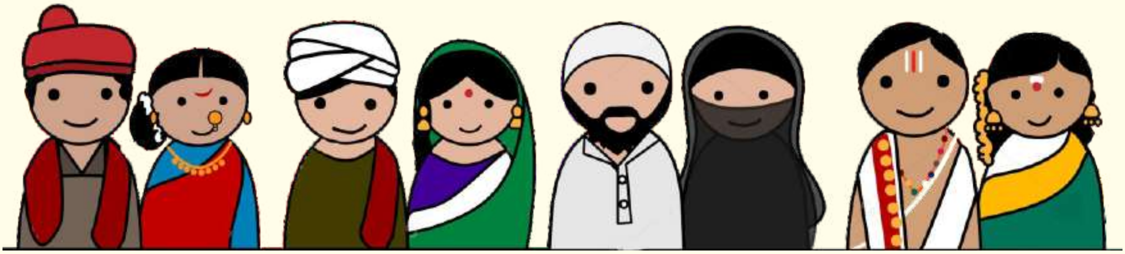

ईमानदारी

एक धनी आदमी रास्ते से जा रहा था। एक गरीब लड़का उसके पास गया और उसने एक रुपया माँगा। धनी व्यक्ति ने अपनी जेब से पाँच रुपये का नोट निकाला और उसके हाथ में देकर कहा कि– ''यह लो और बाकी के मुझे लौटा दो।'' लड़के के पास रेजगारी नहीं थी अतः वह बोला ''आप रुकिये, मैं अभी छुट्टे लाता हूँ।''

लड़के को लौटने में कुछ विलम्ब लगता देख धनी व्यक्ति वहाँ से चला गया। लड़का जब लौटा तो उसे निराशा हुई और सोचने लगा, इससे अच्छा तो पाँच रुपये लेता ही नहीं। फिर उसने निश्चय किया अब कभी रास्ते में वह व्यक्ति मिलेगा तो उसके रुपये लौटा देगा।

वह लड़का रोज भीख माँगकर ही अपना गुजारा करता था लेकिन उसने चार रुपये एक ओर रख दिये क्योंकि वे रुपये तो उसे लौटाने थे।

एक दिन अकस्मात् उस धनी व्यक्ति को भिखारी बालक ने देखा। उसने दौड़कर उसके हाथ में चार रुपये रख दिये। धनी व्यक्ति समझ नहीं पाया। वह भूल ही चुका था। लड़के ने याद दिलाया तो धनी को सब कुछ स्मरण हो गया। धनी उसकी ईमानदारी से प्रभावित हुआ। वह उसे अपने घर ले गया और उसे अपने बेटे के समान रखा।

पूरन सरमा
जयपुर (राजस्थान)

दिमागी कसरत

विशेष शब्द की तलाश

यहाँ दिये गये संकेत एवं अक्षर संख्या को ध्यान में रखते हुए ऐसे शब्द को खोजना है जिसका प्रथम व अन्तिम अक्षर समान हो। जैसे प्रथम वाक्य के लिए 'रविवार' सही उत्तर है।

(1) सप्ताह का एक दिन (4)
(2) गति / वेग (3.5)
(3) अकबर के दरबार में थे (4.5)
(4) दक्षिण भारत का प्रसिद्ध मन्दिर (4)
(5) 'डिक्शनरी' को हिन्दी में कहते हैं (4.5)
(6) पूर्वी राजस्थान का एक प्रसिद्ध अभयारण्य (5.5)
(7) भारत का एक दक्षिणी राज्य है (4.5)
(8) मिठाई के साथ इसे भी खाया जाता है (4)
(9) स्वस्थ व्यक्ति (5)
(10) समुद्र का एक पर्याय शब्द (4.5)
(11) गौतम बुद्ध का एक नाम (4)
(12) राष्ट्रपति / राज्यपाल के लिए सम्मान सूचक शब्द (5)
(13) न्यू लाइफ के लिए हिन्दी में शब्द (5)
(14) दक्षिण भारत की एक प्रादेशिक भाषा (5)
(15) प्रसिद्ध सितारवादक भारतीय संगीतज्ञ (5)
(16) चोट लगने पर लगाई जाती है (4)
(17) चलते समय पैरों की आवाज (4)
(18) सेहत का हालचाल जानने के लिए शब्द (4)

उत्तर इसी अंक में

प्रकाश तातेड़
उदयपुर (राजस्थान)

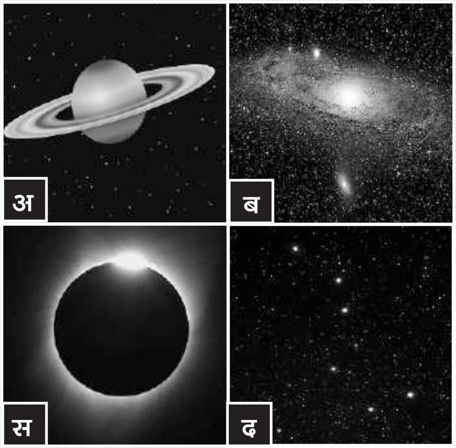

दस सवाल दस जवाब

(1) ऊपर दिये गये चित्रों को पहचानिये।

(2) पृथ्वी से चन्द्रमा की दूरी कितनी है?

(3) सूर्य के बाद कौनसा तारा पृथ्वी के निकट है?

(4) सर्वाधिक उपग्रह वाला ग्रह कौनसा है?

(5) पृथ्वी पर सबसे बड़ा व सबसे छोटा दिन कब होता है?

(6) चन्द्रमा कितने दिन में पृथ्वी का एक चक्कर लगाता है?

(7) पृथ्वी का निकटतम ग्रह कौनसा है?

(8) सौर परिवार का सबसा बड़ा ग्रह कौनसा है?

(9) किस ग्रह का 'वर्षकाल' सबसे कम है?

(10) हेली का पुच्छल तारा कितने वर्ष बाद दिखाई देता है?

उत्तर इसी अंक में

- पति – दुनिया में कैसे–कैसे 420 भरे पड़े हैं।
  पत्नी – क्यों क्या हुआ?
  पति – आज सवेरे दूधवाला नकली नोट दे गया। कहाँ है वह नोट ?
  पत्नी – वह तो मैंने सब्जी वाले को देकर सब्जी खरीद ली।

- रोगी को देखकर डॉक्टर बोला– दमा लगता है।
  रोगी– जी हाँ, मुझे साँस लेने में बड़ी तकलीफ होती है।
  डॉक्टर– कोई चिन्ता नहीं, हम उसे रोक देंगे।

प्रेरक वचन

इनसान को दिया गया सबसे बड़ा वाद्य यंत्र आवाज है।

❖

दुनिया को अपना सर्वश्रेष्ठ दीजिये और आपके पास सर्वश्रेष्ठ लौटकर आएगा।

❖

कोई मूल्य तब मूल्यवान है जब मूल्य का मूल्य स्वयं के लिए मूल्यवान हो।

❖

सबसे उच्च कोटि की सेवा ऐसे व्यक्ति की मदद करना है जो बदले में आपको धन्यवाद कहने में असमर्थ हो।

❖

जो व्यक्ति सबसे कम ग्रहण करता है और सबसे अधिक योगदान देता है वह परिपक्व है, क्योंकि जीने में ही आत्म–विकास निहित है।

❖

अच्छा और बुद्धिमान वह है जो हमेशा सच बोलता है, धर्म के अनुसार काम करता है और दूसरों को प्रसन्न बनाने का प्रयास करता है।

स्वामी दयानन्द सरस्वती

पिता

कितने हैं उपकार पिता के
गिनती करना मुश्किल है।
है पिता की कई विशेषता,
गिन–बताना मुश्किल है।

पिता घर आँगन के आगे,
नभ भी छोटा लगता है।
पिता के अस्तित्व के आगे,
जग भी छोटा लगता है।

है नस–नस में खून पिता का,
जिसे मिटाना मुश्किल है।
रग–रग में है पिता समाया,
उसे भुलाना मुश्किल है।

जन्म–जन्म का साथ पिता का,
रहता हरदम साथ पिता।
लिखे नाम वहाँ नाम पिता का,
पुत्र बताते नाम पिता।

पिता–आशीष से बढ़कर,
कुछ भी जग में और नहीं।
पिता सम्बल स्नेह हमेशा,
रहे जरूरत और नहीं।

रामगोपाल राही
लाखेरी (राजस्थान)

दोनों चित्रों में आठ अन्तर ढूँढ़िए

उत्तर इसी अंक में

''बच्चो, कल तुम सबको सवेरे स्कूल पहुँचना है।" क्लास में टीचर मैम ने कहा तो सारे बच्चे चौंक गए। "पर टीचर कल तो संडे है और संडे को स्कूल में छुट्टी रहती है।" 10 साल की प्रीति ने खड़े होकर कहा तो मैम मुस्कुरा दी। "बेटा, कल संडे है और मैं जानती हूँ कि संडे को स्कूल बन्द रहता है। कल हम स्कूल में पढ़ाई के लिए नहीं बल्कि एक घंटा सफाई अभियान के लिए आएँगे। जब सारे मिलकर अपने प्यारे स्कूल को साफ सुथरा बनाएँगे।" टीचर ने बताया तो प्रीति समेत सभी बच्चे इस अभियान को लेकर खूब उत्साहित हो गए।

ठीक अगले दिन सभी बच्चों ने एक साथ मिलकर पूरे मनोयोग से स्कूल की सफाई की। यहाँ वहाँ जितना भी कचरा पड़ा था सारा साफ हो जाने से स्कूल चमकने लगा था। सफाई के बाद सबने हाथ मुँह धोकर नाश्ता किया और फिर स्कूल की तरफ से बच्चों को टीशर्ट भी उपहार में दी गई। प्रीति का छोटा भाई मोहित भी उसी स्कूल में पढ़ता था। दोनों भाई बहन स्कूल से घर आए तो देखा कि मम्मी पापा कहीं जाने की तैयारी कर रहे थे।

अनोखी सफाई

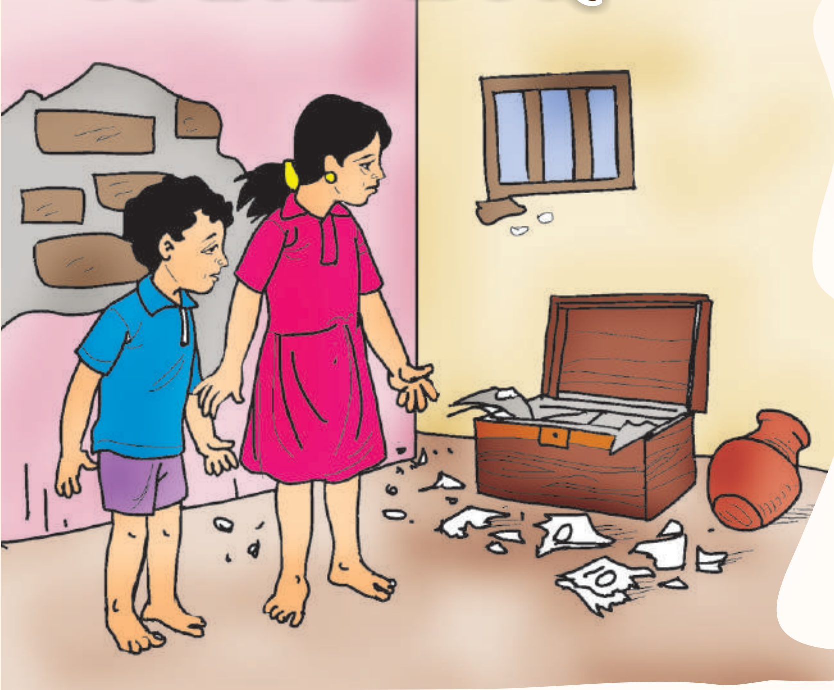

"हम दोनों तुम्हारे ही आने का इंतजार कर रहे थे। हमें किसी जरूरी काम से बाहर जाना है। तुम्हारे लिए नाश्ता रखा हुआ है। नाश्ता करने के बाद तुम बैठकर पढ़ाई करना और अपना ख्याल रखना।" मम्मी ने प्रीति और मोहित से कहा। "और हाँ, घर से बाहर मत निकलना। हम जब तक नहीं आते घर पर ही रहना।" पापा बोले तो दोनों बच्चों ने ''हाँ'' कहा। मम्मी–पापा के जाने के बाद प्रीति और मोहित दोनों ने कपड़े बदलकर नाश्ता किया और पढ़ने बैठ गए। मम्मी पापा के बगैर उनका मन नहीं लग रहा था। "दीदी, एक आइडिया है। क्यों न हम दोनों मिलकर आज पूरे घर की सफाई करें। देखो न, यहाँ–वहाँ कितना कचरा जमा हो गया है?" मोहित ने प्रस्ताव रखा।

"बात तो तुम्हारी सही है मोहित। देखा नहीं, आज हमारा स्कूल सफाई के बाद कितना साफ सुथरा नजर आने लगा था। स्कूल साफ हो सकता है तो घर क्यों नहीं? चलो, दोनों मिलकर यही काम करते हैं।" दोनों भाई बहन ने मिलकर पूरे घर को साफ सुथरा बनाने का बीड़ा उठा लिया। दोनों झाड़ू हाथ में लेकर सफाई अभियान में लग गए। "यह कमरा हमेशा ही बन्द रहता है। चलो आज इसे खोल कर देखें कि यहाँ क्या है?" प्रीति ने पिछवाड़े के कमरे का ताला खोला तो वहाँ की हालत देखकर दंग रह गई।

पूरा कमरा अस्त–व्यस्त पड़ा था। टूटा फूटा सामान और कबाड़ इधर–उधर बिखरा हुआ था। बस वही एक कमरा बाकी बचा था जिसकी सफाई होनी बाकी थी। आज दोनों पर मानो सफाई का भूत सवार था। इसलिए बिना थके वे इस कमरे की सफाई में जुट गए।

"मोहित, जरा यहाँ आना। देखो, इस बक्से में क्या है?" प्रीति ने

एक बन्द पड़े बक्से को देखकर आवाज लगाई तो दोनों ने मिलकर उसे खोला। "इतने सारे रुपए! इन रुपयों को यहाँ इस तरह कबाड़ में किसने लाकर रखा होगा?" बक्सा खुलते ही प्रीति की आँखें फटी की फटी रह गई क्योंकि उसमें नोट भरे पड़े थे। "प्रीति, पहले यहाँ आओ। देखो इस पुराने बैग में भी रुपए पड़े हैं।" मोहित को वहाँ खूँटी पर लटका हुआ एक बैग मिला तो उसने उसे खोला।

"अरे! यह क्या, इसमें रखे आधे से ज्यादा रुपए तो चूहों ने ही कुतर डाले हैं।" मोहित के मुँह से निकला। जैसे–जैसे दोनों बच्चे सफाई कर रहे थे, उन्हें कहीं रुपए रखे हुए मिल रहे थे तो कहीं गहने। उनकी समझ में यह नहीं आ रहा था कि आखिर यहाँ पर इस हालत में इन्हें रखने का आइडिया किसका था? "जब हम शाम को मम्मी–पापा के आने पर उन्हें बताएँगे कि हमें यहाँ इतना बड़ा खजाना मिला है तो वे कितने खुश होंगे? है न दीदी।" मोहित बोला।

"हाँ मोहित, शाम हो गई है, अब वे आते ही होंगे।" प्रीति ने कहा, तभी दरवाजे की बेल बजी। "अरे मूर्खो, तुम्हें किसने कहा था इस कमरे को खोलने के लिए? यह सब क्या है?" बच्चों ने जब उन्हें वहाँ मिले रुपयों के बारे में बताया तो शाबासी की बजाए पापा ने उल्टे उन्हें डाँटा। "पर पापा सफाई करना तो अच्छी बात है न, आप ही ने तो कहा था कि हमें सफाई का पूरा ध्यान रखना चाहिए।" मोहित बोला। "समझ में यह नहीं आया कि यहाँ पर इतने सारे रुपए आए कहाँ से? देखो ना मम्मी, कितने सारे नोट तो चूहे ही कुतर गए।" प्रीति ने कुतरे हुए नोट बताते हुए कहा। "धीरे बोलो बेटा, कहीं कोई सुन न ले। इनकम टैक्स वालों के डर से हमें इस तरह रुपए छुपा कर रखने पड़ते हैं।" मम्मी धीमे स्वर में बोली।

प्रीति और मोहित को कुछ समझ में नहीं आ रहा था कि आयकर वालों से इस तरह डरने की क्या बात है? तभी प्रीति को अपनी किताब का एक पाठ ध्यान में आया तो वह जाकर अपनी किताब ले आई। "पापा, इस किताब में तो लिखा है कि हमें अपना इनकम टैक्स पूरी ईमानदारी के साथ देना चाहिए, अगर हम ऐसा करते हैं तो हमें किसी बात का डर नहीं रहता।" प्रीति ने वह पाठ खोलकर पापा के सामने रखा। "हाँ पापा, इसमें यह भी लिखा है कि हम जो आयकर सरकार को देते हैं, उस धन का उपयोग सरकार हमारे लिए विकास के कामों जैसे सड़क, पुल, स्कूल, अस्पताल आदि बनाने में खर्च करती है। इसमें तो कहीं नहीं लिखा कि इनकम टैक्स के डर से हमें अपने पैसे कहीं छुपा कर रखने चाहिए।" मोहित बोला।

बच्चों की बात सुनकर थोड़ी देर के लिए वहां सन्नाटा छा गया। "बच्चे सही तो कह रहे हैं। देखिए न, आयकर बचाने के डर से हमने अपनी कमाई के पैसे यहाँ कबाड़ में छुपा कर रखे थे। चूहों ने कुतर कर उन्हें पूरा ही बरबाद कर दिया।" प्रीति की मम्मी ने कहा।

"अगर हम इन रुपयों का इनकम टैक्स भरते तो वह इसका कुछ हिस्सा ही होता। कम से कम इस तरह चूहे पूरे रुपए तो बरबाद नहीं करते। इतनी छोटी सी बात जो हम नहीं समझ सके, ये बच्चे कितनी आसानी से समझते हैं।" प्रीति के पापा को भी अपनी भूल महसूस हो रही थी। "पापा जो हुआ सो हुआ। आप हम बच्चों से वादा करिए कि आज के बाद आप कभी आयकर की चोरी नहीं करेंगे और अपनी आय का टैक्स पूरी ईमानदारी के साथ भरेंगे ताकि इस तरह छुपा कर रुपए न रखने पड़े।" प्रीति ने हाथ जोड़कर अपने पापा से कहा।

उसकी बात सुनकर पापा मुस्कुरा दिए– "हमें तुम दोनों पर गर्व है, बच्चो! तुमने हमारी आँखें खोल दी। हम वादा करते हैं कि आज के बाद कभी किसी तरह की चोरी नहीं करेंगे।" "आप कितने अच्छे हो पापा।" कहते हुए दोनों बच्चे अपने पापा से लिपट गए। पास खड़ी मम्मी भी मुस्कुरा रही थी।

इन्द्रजीत कौशिक
बीकानेर (राजस्थान)

व्हाट्सएप कहानी

एक सेठ जी थे जिनके पास काफी दौलत थी। सेठ जी ने अपनी बेटी की शादी एक बड़े घर में की थी। परन्तु व्यापार में घाटा होने से बहुत सब धन समाप्त हो गया। बेटी की यह हालत देखकर सेठानी जी रोज सेठ जी से कहती – ''आप दुनिया की मदद करते हो। अपनी बेटी परेशानी में है, उसकी मदद क्यों नहीं करते हो?''

सेठ जी कहते – "जब उनका भाग्य उदय होगा तो अपने आप सब मदद करने को तैयार हो जायेंगे...।" एक दिन सेठ जी शहर से बाहर गये थे कि तभी उनका दामाद घर आया। सास ने दामाद का आदर–सत्कार किया और बेटी की मदद करने का विचार उसके मन में आया कि क्यों न मोतीचूर के लड्डुओं में अशर्फियाँ(सोने के सिक्के) रख दी जाये।

यह सोचकर सेठानी ने लड्डुओं के बीच में अशर्फियाँ दबा कर रख दी। दामाद को टीका लगाकर विदा करते समय पाँच किलों शुद्ध देशी घी के लड्डू जिनमे अशर्फियाँ थी, दिये। दामाद लड्डू लेकर घर से चला, दामाद ने सोचा कि– ''इतना वजन कौन लेकर जाये? क्यों न ये लड्डू यहीं मिठाई की दुकान पर बेच दूँ।'' और दामाद ने वह लड्डुओं का पैकेट मिठाई वाले को बेच दिया और पैसे जेब में डालकर चला गया।

उधर सेठ जी बाहर से आये तो उन्होंने सोचा– ''घर के लिये मिठाई की दुकान से मोतीचूर के लड्डू लेता चलूँ।'' सेठ जी ने दुकानदार से लड्डू माँगे। मिठाई वाले ने वही लड्डू का पैकेट सेठ जी को वापस बेच दिया।

सेठ जी लड्डू लेकर घर आये। सेठानी ने जब लड्डुओं का वही पैकेट देखा तो सेठानी ने लड्डू फोड़कर देखे, अशर्फियाँ देखकर अपना माथा पीट लिया। सेठानी ने सेठ जी को दामाद के आने से लेकर जाने तक और लड्डुओं में अशर्फियाँ छिपाने की बात कह डाली।

सेठ जी बोले कि भाग्यवान मैंनें पहले ही समझाया था कि अभी उनका भाग्य नहीं जागा। देखा, मोहरें न तो दामाद के भाग्य में थी और न ही मिठाई वाले के भाग्य में। कहते हैं कि भाग्य से ज्यादा और समय से पहले किसी को कुछ नहीं मिलता है। इसलिए ईश्वर जितना दे उसी में सन्तोष करो।

चित्र पहेली

बच्चो! इस चित्र को ध्यान से देखकर बताओ कि इसमें 1 से 9 के कौन–कौन से अंकों का कितनी बार उपयोग किया गया है और उन सभी अंकों का कुल योग क्या है ?

उत्तर इसी अंक में

चाँद मोहम्मद घोसी
मेड़ता सिटी (राजस्थान)

पक्षियों के पंख

एक पहेली में पूछा जाता है– वह कौनसा पक्षी है, जिसके सिर,पर, पैर होते हैं? इसे बोलने पर उत्तर खोजना कुछ कठिन हो जाता है मगर लिखे हुए को ध्यान से पढ़े तो पता चल जाता है कि यहाँ 'पर' से मतलब feathers से है। तब उत्तर बनता है– सभी पक्षी। है न, मजेदार पहेली! इन्हीं परों व पंखों पर बात करते हैं।

परिन्दों के हवा में पंख फड़फड़ाने की प्रवृत्ति जन्मजात होती है। यही वह गुण है, जिसकी बदौलत उनके पूर्वजों ने घोंसलों से गिरने के बजाय उड़ना सीखा है। अध्ययन में सामने आया कि एक दिन की चिड़िया भी घोंसले से गिरने के बाद अपने पंखों की सहायता से खुद को सन्तुलित कर सकती है। यह गुण समय के साथ विकसित होता है और अंततः वह उड़ना सीख जाता है। अमेरिका में बर्कले स्थित कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय में इंटिग्रेटिव बायोलॉजी के प्रोफेसर रॉबर्ट डूडले के अनुसार– "अंडे से निकलने के पहले दिन से ही चिड़िया अपना पंख हवा में फड़फड़ाना शुरू कर देती है।"

प्रकृति ने जिन पक्षियों और कीट पतंगों को उड़ने की क्षमता प्रदान की है, उन्हें उड़ते समय अपने पंख हिलाने होते हैं। पंखों की गति के सहारे ही वे आकाश में दूरी तय करते हैं। कीट पतंगे भी उड़ते समय अपने पंख फड़फड़ाते हैं।

मशक जाति के कीटों में फर्सि–पोमइया वंश का बौना मिस अपने पंख एक मिनट में 62760 बार फड़फड़ा लेता है। जहाँ तक पंखों की सबसे धीमी फड़कन का प्रश्न है, वह अबाबलि की पूँछवाली तितली के पंखों की है। उसके पंख एक मिनट में 300 बार फड़फड़ाते हैं। उड़ने वाली एलबट्रॉस के पंखों का फैलाव 3.15 मीटर नापा गया है। फोबिक्स कुक्कुट के पर सबसे अधिक लम्बे होते हैं। दक्षिण–पश्चिम जापान में इन्हें पाला जा रहा है।

जिस हमिंगबर्ड का गला रूबी के रंग का होता है, उसके शरीर पर केवल 940 पर होते हैं। पक्षियों में किसी भी पक्षी के सबसे बड़े पंख फिनिक्स पक्षी के होते हैं जो कि दक्षिण पश्चिम जापान में पायी जाती हैं। मध्यम व उत्तरी चीन के रीब्ज तीतर की बीच की दुम के पंख 8 फीट तक लम्बे हो सकते हैं। दक्षिण अमेरिका के सींगदार सनजमे के डैने सर्वाधिक एक सेकंड में 90 बार फड़कते हैं। भारी शरीर वाले गिद्धों के पंख कभी–कभी एक सेकंड में एक ही बार फड़कते हैं। दक्षिण अमेरिका के बड़े गिद्ध तो 100 किलोमीटर तक की दूरी बिना पंख फड़काए ही पार कर लेते हैं। अचरज भरी है पक्षियों के पंखों की बातें!

डॉ. विनोद गुप्ता
मन्दसौर (मध्यप्रदेश)

जीत की मुसकान

जया पढ़ाई में अपने दोनों भाइयों मुकेश और अरविन्द से तेज थी। जब तक वे क ख ग घ सीख रहे थे, उसने पाँच तक का पहाड़ा याद कर लिया था। तीनों भाई बहन विष्णुपुर गाँव के ही प्राथमिक स्कूल में पढ़ते थे। दोनो भाइयों का पढ़ाई में मन नहीं लगता था।

जया के पिताजी रामानन्द गाँव में ही खेती बाड़ी का काम करते थे। वे किसान थे। उनका सोचना था कि बच्चे थोड़ा बहुत पढ़ लिखकर खेती बाड़ी सँभालेंगे और बेटी ब्याह कर दूसरे घर जाएगी। वे जया बेटी को ज्यादा पढ़ाने लिखाने के पक्ष में नहीं थे। जया कोई भी पाठ बहुत जल्दी याद कर लेती थी। वह अपने स्कूल में हर साल प्रथम श्रेणी से पास करती जबकि उसके दोनों भाई औसत अंक ही ला पाते थे। उसने दोनो भाइयों पर ध्यान देना शुरू किया। स्कूल से लौटकर शाम को खेलने कूदने के बाद जया जब पढ़ने बैठती अपने साथ उन्हें भी पढ़ने के लिए बिठाने लगी।

पढ़ने में उनका मन तो लगता नहीं था। जया उन्हें कम से कम एक पहाड़ा याद करके सुना देने के बाद उठने को कहती और जब तक वे पहाड़ा नहीं सुनाते। उन्हें उठने नहीं देती। मजबूरी में वे पहाड़ा याद करने लगे और पढ़ने में मन लगाने लगे।

जया ने पिताजी से कहकर अपने घर अखबार मँगवाना शुरू किया। अब वे पढ़ाई के साथ–साथ देश विदेश के समाचार भी पढ़ने लगे। जया को सम्पादकीय पृष्ठ पढ़ने में अच्छा लगता था। साथ ही पड़ौसी शहर में क्या कुछ नया हो रहा है? बच्चों के लिए कहानी, कविता, पहेली, चित्रांकन, वह इन सब विषयों पर खूब ध्यान देती। मुकेश और अरविन्द को भी पेपर पढ़ने के लिए प्रेरित करती।

इसके लिए उसने एक आइडिया सोचा। वह जब भी अखबार में कोई लेख पढ़ती। उसके बारे में दोनों भाइयों से चर्चा करती फिर पूछती– ''अच्छा बताओ, वह लेख कहाँ छपा है?''

दोनों जल्दी–जल्दी अखबार खोलकर दीदी ने जो पूछा है उसके बारे में बात करने के लिए उसे पूरा पढ़ते फिर उस विषय पर चर्चा करते। उनके ऐसा करने से जया खूब खुश होती। इस प्रकार उसने भाइयों को अखबार पढ़ने की आदत डाल दी। वे देखा–देखी पढ़ाई पर पूरा ध्यान देने लगे। वार्षिक परीक्षा पास करके जया नौवीं क्लास में आ गई और उसके दोनों भाई सातवीं और पाँचवी क्लास में।

घर में जो अखबार आ रहा था। रामानन्द ने कितनी बार इसे फिजूलखर्ची कहकर बन्द कराना चाहा लेकिन जया के साथ–साथ दोनों भाइयों ने इसका विरोध किया। कहने लगे– ''वे एक टाइम उपवास कर लेंगे तो उससे अखबार का पैसा भरा जा सकता है।'' सुनकर पिताजी द्रवित हो उठे। उनकी इतनी रुचि देखकर उन्होंने अखबार बन्द करने का इरादा ही छोड़ दिया।

विष्णुपुर गाँव अभी भी पिछड़ा हुआ था। पूरे गाँव में अंधविश्वास और अशिक्षा का माहौल था। यहाँ पर लड़कियाँ थोड़ी बड़ी हुई कि उनका विवाह कर ससुराल भेज देने का रिवाज था। लड़कों की भी शादी जल्दी हो जाती थी। इसीलिए उनके गाँव में पाँचवीं तक ही स्कूल था। आगे कोई पढ़ता ही नहीं था। जया और उसके दोनों भाइयों ने कस्बे के बड़े स्कूल में नाम लिखवा लिया था। तीनों साथ ही जाते और आते थे।

जया ने एक दिन पिताजी को माँ से कहते हुए सुनी– ''जया अब बड़ी हो रही है, उसके हाथ पीले करने हैं। उसके बाद मुकेश का भी विवाह कर देंगे। जया अपने ससुराल चली जाएगी तो हम सब गंगा नहा लेंगे। अपने जिम्मेदारी से छुटकारा भी तो पाना है।''

जया ने सुना तो वह उदास हो गई। वह अभी और आगे पढ़ना चाहती थी। टीचर बनना चाहती थी। टीचर बनके गाँव के ही स्कूल में पढ़ाना चाहती थी। गाँव को शिक्षित करना चाहती थी। उसने देखा है कि गाँव के लोग कितने अशिक्षित हैं? यहाँ चारों तरफ गरीबी पसरी हुई है। गाँव वाले अंधविश्वास में जकड़े हुए हैं। बच्चे स्कूल जाने के बजाय दिनभर इधर–उधर खेलते हैं। फिर बड़े हुए तो उनकी शादी कर दी जाती है। लोग बीमार पड़ने पर डाक्टर के पास जाने के बजाय गाँव के मन्दिर में झाड़ फूँक कराते हैं। राम किशन चाचा का बेटा बेचारा ऐसे ही इलाज के अभाव में मर गया।

उसे आवेश होता जब लड़कियों को कम उम्र में ही शादी कर दी जाती। वह चाहती थी बोलना लेकिन छोटी होने के कारण कोई उसकी सुनना चाहता भला! उसकी खास सहेली विनीता जो अभी पाँचवी में ही पढ़ रही थी उसके बाबा ने उसकी शादी करवा दी। वह ससुराल चली गई। कितनी रो रही थी शादी नहीं करने के लिए लेकिन किसी ने एक न सुनी। उसका वश चलता तो वह उसके बाबा को जेल भेजवा देती। जब से उसने सुना है उसकी भी शादी हो जाएगी। एकांत में वह खुब रोई– ''कैसे समझाए माँ पिताजी को।'' दोनो भाई, बहन की चिन्ता समझ रहे थे लेकिन वे कुछ कर नहीं पा रहे थे।

तभी एक दिन अरविन्द अचानक चिल्ला पड़ा– ''मिल गया, आइडिया मिल गया, हम दीदी की शादी रुकवा सकते हैं।'' दोनों भाई बहन एक साथ अरविन्द का मुँह देखने लगे तो उसने कहा– ''हाँ दीदी, हम चाहेंगे तो यह काम हो सकता है।'' मुकेश और जया ने एक साथ कहा– ''वह कैसे?'' अरविन्द ने अखबार में छपी एक खबर पढ़ने के लिए दोनों के सामने कर दिया– ''ये देखो, ऐसे।''

दोनों भाई बहन झटपट अखबार की खबर को पढ़ने लगे। लिखा था– ''एक लड़की अपनी शादी रुकवाने के लिए थाना पहुँच गई। उसके माँ बाप जबरदस्ती उसकी शादी करना चाहते थे। वह चौथी क्लास में पढ़ती है और आगे भी पढ़ना चाहती है।' खबर पढ़कर जया ने कहा– ''तो इससे क्या होगा?'' अरविन्द ने उत्साहित होकर कहा– ''एक काम करते हैं।'' तीनो आपस में विचार करने लगे।

अरविन्द बोला– ''दीदी सबसे पहले पिताजी के पास जाकर बोलेगी कि वह शादी नहीं करेगी। अभी पढ़ना चाहती है।'' मुकेश बोला– ''अगर वे नहीं माने तो?'' ''हम तीनो मिलकर उन्हें मनाने की कोशिश करेंगे। अगर फिर भी वे नहीं माने तो दीदी की शादी रुकवाने के लिए पुलिस की मदद लेंगे। वे हमारी मदद करेंगे। अखबार में एक दिन मैं एक लेख पढ़ रहा था जिसमें लिखा था– बाल विवाह अपराध है और इसके रोकथाम के लिए सरकार मदद करती है। पुलिस भी तो सरकार की है, है ना दीदी।'' अरविन्द ने समझदारी से कहा। तीनों के चेहरे पर एक विजयी मुसकान थी।

प्रदीप कुमार शर्मा
जमशेदपुर (झारखंड)

भविष्य का यातायात

ड्राइवरलेस कार

"मम्मी, आज मौसम कितना अच्छा है! कहीं पिकनिक पर चलते हैं।" बंटी ने ज्योंही कहा, मम्मी बोल पड़ी– "मगर तुम्हारे पापा तो ट्यूर पर गये हैं। कार कौन चलाएगा? मुझे तो ड्राइविंग आती नहीं।" "हाँ, मम्मा, सही बात है।" बंटी ने उदास होकर कहा। कुछ देर बाद वह चहक कर बोला– "मम्मा, यदि ड्राइवरलेस कार होती तो... ।" लगता है बंटी का सपना जल्दी ही साकार होने वाला है।

सेल्फ ड्राइविंग कार अथवा बिना ड्राइवर वाली कार वह वाहन है जो एक जगह से दूसरी जगह तक जाने के लिए कृत्रिम बुद्धिमत्ता (Artificial Intelligence), रेडार, लिडार, कैमरा, सेन्सर्स, जी.पी. एस आदि का उपयोग करता है। ड्राइवरलेस वाहनों के विकास में टेस्ला, गूगल, एप्पल, टाटा मोटर्स, वोल्वो, मर्सडीज बेंज, फोर्ड, बी एम डब्ल्यू आदि कार निर्माता तेज गति से कार्य कर रहे हैं। ड्राइवरलेस कार का विकास अभी तक कुछ स्तर तक हो पाया है आइये, इन कारों की पद्धति को समझते हैं–

1. सबसे पहले कार यात्री अपने स्थान को कम्प्यूटर पर सेट करता है। इससे कार का सोफ्टवेयर मार्ग तय कर लेता है।
2. कार के ऊपर घूमता हुआ लिडार (LIDAR, Light Detection and Ranging) 60 मीटर दूर तक की बाधाओं को देखकर सोफ्टवेयर को सूचनाएँ देता है जिससे कार सुरक्षित आगे बढ़ सके।
3. कार के पहिए में सेंसर लगे होते हैं जो कम्प्यूटर सोफ्टवेयर को सड़क का तीन विमीय नक्शा बना कर देते हैं।
4. रेडार (RADAR, रेडियो डिटेक्शन एण्ड रेंजिग) सिस्टम गाड़ी के आगे पीछे लगाया जाता है। यह सिस्टम प्रति सैकण्ड लाखों तरगें भेजता है जिन्हें पुनः प्राप्त कर कार के सोफ्टवेयर को सड़क पर अवरोधों की जानकारी देता है।
5. कार के ऊपर 8 से 28 तक कैमरे लगे होते हैं जो 360° की पूरी जानकारी कार के सोफ्टवेयर को देते हैं।
6. कृत्रिम बुद्धिमत्ता सारी जानकारी के आधार पर गूगल मैप के साथ सम्पर्क में रहते हुए वाहन को निर्धारित मार्ग पर सुरक्षित आगे बढ़ाते हुए निश्चित स्थान तक ले जाती है।

विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार सड़क दुर्घटनाओं में 13.50 लाख व्यक्ति प्रतिवर्ष मृत्यु को प्राप्त हो जाते हैं। भारत में 4.5 लाख सड़क दुर्घटनाओं में 1.5 लाख लोगों की प्रतिवर्ष मृत्यु हो जाती है। 95 प्रतिशत सड़क दुर्घटनाएँ मानवीय त्रुटियों के कारण होती हैं। भारत में 70–75 प्रतिशत दुर्घटनाएँ ड्राइवरों की गलती से होती है। ड्राइवर रहित वाहनों के पूर्ण विकसित हो जाने पर सड़क दुर्घटनाएँ नहीं के समान होंगी। सड़कों पर भीड़–भाड़ नहीं रहेगी, ट्रेफिक लाइटों की आवश्यकता नहीं रहेगी। ड्राइवर पर खर्च नहीं करना पड़ेगा और ईंधन भी कम खर्च होगा।

कम्प्यूटर विज्ञान में प्रगति के साथ कृत्रिम बुद्धिमत्ता (Artificial Intelligence) अथवा मशीनी बुद्धिमत्ता (Machine Learning) के क्षेत्र में भी बहुत विकास हुआ है। यही कारण है कि अब उद्योग, चिकित्सा, व्यापार, शिक्षा–शोध आदि क्षेत्रों में बड़े पैमाने पर कृत्रिम बुद्धिमत्ता का उपयोग बढ़ रहा है क्योंकि इससे मानवीय त्रुटियों से बचाव के साथ दक्षता भी बढ़ती है। इसी दक्षता का एक सफल आविष्कार ड्राइवरलेस कार है। आशा है, ये वाहन निकट भविष्य में विश्व की सड़कों पर छा जायेंगे।

डॉ. के पी तलेसरा
उदयपुर (राजस्थान)

सम्भावनाओं से भरा खेल

हैंडबाल

हैंडबॉल करीब–करीब फुटबॉल की तरह का ही एक खेल हैं, जिसमें खिलाड़ी पैरों के बदले हाथ से खेलते हैं। इस खेल में सात–सात खिलाड़ियों की (छह खिलाड़ी और एक गोलकीपर) दो टीमें खेलती हैं। इसमें तीस–तीस मिनट की दो पारी हाती हैं। सबसे ज्यादा गोल करने वाली टीम जीतती है।

इस खेल की शुरुआत किसी एक देश में नहीं हुई। इस खेल का उल्लेख मध्य काल में फ्रांस और ग्रीनलैंड में मिलता है। मिस्र और अफ्रीका में भी इस खेल के खेले जाने की पुष्टि हुई है।

आज जो हैंडबॉल का खेल होता है, वह उन्नीसवीं सदी में प्रकाश में आया। मध्य यूरोप में डेनमार्क, जर्मनी, नार्वे और स्वीडन ने इसकी शुरुआत की। डेन होल्गर नीलसन ने 1898 में इसके नियम लिखे और 1906 में उन्हें छापा गया। 1919 में इसके नियम कुछ बदले गए और नए नियमों के आधार पर पहला अन्तरराष्ट्रीय मैच जर्मनी और बेल्जियम के बीच 1925 में खेला गया। खिलाड़ियों का प्रथम मैच जर्मनी और आस्ट्रिया के बीच 1930 में हुआ।

इस खेल को पहली बार 1936 के बर्लिन ओलम्पिक में शामिल किया गया। पर बाद में इसे वहाँ से हटा दिया गया। फिर 36 वर्ष बाद म्यूनिख ओलम्पिक में इस खेल की वापसी हुई। महिलाओं का हैंडबॉल 1976 के मांट्रियल ओलम्पिक में शामिल हुआ। जर्मनी की टीम प्रथम ओलम्पिक के साथ–साथ विश्व चैम्पियन बनी

इस खेल का मैदान चालीस मीटर लम्बा और बीस मीटर चौड़ा होता है। दोनों तरफ गोल बने होते हैं। गोल पोस्ट की चौड़ाई तीन मीटर और ऊँचाई दो मीटर होती है। खेलने वाली दोनों टीमें प्रत्येक हाफ में एक–एक टाइम आउट ले सकती है, जिसकी अवधि एक मिनट होती है। दो रैफरी एक साथ मैच का संचालन करते हैं। कुल अठारह तरह के सिग्नल्स होते हैं जिनके द्वारा रैफरी खेल और खिलाड़ियों को नियन्त्रित करते हैं। फुटबॉल की तरह इसमें भी रैफरी पीला कार्ड चेतावनी और लाल कार्ड खिलाड़ी को निकालने के लिए दिखाते हैं। एक स्कोरकीपर होता है जो गोलों की संख्या दर्ज करता है और उसके साथ होता है टाइमकीपर, जो समय का ध्यान रखता है। टीमों द्वारा टाइम आउट कहने पर टाइमकीपर ही टाइम आउट की घोषणा करता है।

भारत में हैंडबाल

भारत में यह खेल करीब 52 साल पहले 1970 के आसपास आया। हरियाणा के जगत सिंह लोहान के प्रयासों से 1972 में हैंडबाल फेडरेशन आफ इंडिया का गठन हो पाया। उसी साल 1972 में पहला हैंडबाल नेशनल चैम्पियनशिप का आयोजन हुआ। हरियाणा ने खिताब जीता तो विदर्भ की टीम उपविजेता रही।

अनिल जायसवाल
नई दिल्ली

पुलिस अंकल

जैनब जब भी चौराहे से गुजरती तो उसकी नजर वहाँ खड़े पुलिस अंकल पर जरूर जाती। वह देखती थी कि किस तरह से वे बीच चौराहे पर खड़े–खड़े हाथों के इशारे कर–करके गाड़ियों को आने–जाने का संकेत करते। स्कूल से लौटते में कई बार ज्यादा जाम और गरमी होने पर वह सड़क किनारे पेड़ के नीचे खड़ी हो जाती थी। वह खड़े–खड़े पुलिस अंकल को देखती और उनकी तरह हाथों का इशारा करती। उसको ऐसा करता देख उसकी सहेली नेहा कहती– ''अरे पुलिस मैडम, चलिए सड़क खाली हो गयी है।'' यह सुन वह मुस्कुरा देती और चल देती।

जैनब को स्कूल से लौटने में अकसर देर हो जाती। कारण था, कई स्कूलों की एक साथ छुट्टी होना। इस कारण सड़क पर न केवल बच्चों की बल्कि उनको लेने आये अभिभावकों की भीड़ जमा हो जाती। इसके अलावा स्कूलों की छोटी–बड़ी गाड़ियाँ दूर–दूर के रूट पर जाती थीं। वो भी जाम लगने का बड़ा कारण थी। इस सबके कारण सड़कों–चौराहों पर बहुत–बहुत देर तक जाम रहता था।

यूँ तो जैनब का स्कूल उसके घर से बहुत दूर नहीं था। लेकिन सड़क पर लगने वाला जाम उसके लिए बड़ी समस्या था। जैनब कक्षा पाँच में पढ़ती थी। बहुत प्यारी और अपनी बोली से सबको लुभाने वाली संवेदनशील बच्ची थी।

जैनब स्कूल आने–जाने के अलावा भी उसी रास्ते से बाजार आया–जाया करती थी। उसका कोई भी काम होता वह अपनी प्यारी टिन्नी को साथ लेती और बाजार चल देती। टिन्नी उसे बहुत प्यारी थी। टिन्नी को खूब साफ–सफाई से रखती। उसके नानू ने अभी उसके पिछले जन्मदिन पर ही तो उसे टिन्नी लाकर दी थी। जैनब जब उस पर पहली बार बैठी और घंटी बजायी, तब घंटी टिन्न–टिन्न करके बजी। तभी से जैनब ने उसका नाम टिन्नी रख दिया।

पापा–मम्मी के साथ भी जैनब बाजार जाती थी। कार में पापा के साथ वह आगे बैठा करती थी।

वह सोचा करती कि इतनी गरमी में पुलिस अंकल सड़क के बीच कैसे खड़े रहते हैं? यहाँ इतनी गाड़ियों के बीच धुएँ–धूल में कई–कई घंटे रहना। उफ्फ... कितना मुश्किल होता होगा? अकसर वह ऐसी बात नेहा से कहती। ''तो क्या हुआ, यही उनकी नौकरी है। उन्हें इसी बात की तनख्वाह मिलती है। वैसे भी हम जो काम करते हैं, हमें उसकी आदत पड़ जाती है।'' नेहा, जैनब के सवालों के जवाब में ऐसे ही फटाफट ज्ञान की वर्षा कर देती थी।

लेकिन जैनब के मन में ऐसे सवाल उथल–पुथल करते रहते थे। ''चलो नौकरी करना ठीक है, लेकिन कुछ लोग उनकी बात ही नहीं मानते! रुकने का इशारा होने के बावजूद चौराहों को पार करने के लिए गाड़ी बढ़ा देते हैं और जाम लगा देते हैं। समझाने पर या रोकने पर वे झगड़ने लगते हैं। एक तो नियम नहीं मानते, दूसरा नियम तोड़कर पुलिस अंकल से लडते हैं। क्या इस तरह से लोगों

की बद्‌तमीजी को सहना भी उनकी नौकरी की मजबूरी है?'' जैनब ने नेहा से पूछा।

''हाँ वो तो ठीक है जैनब, लेकिन हम इसमें क्या कर सकते हैं? हम तो अभी इतने छोटे हैं कि नियम तोड़ने वालों को समझा भी नहीं सकते।'' यह कहकर नेहा हँसने लगी।

उसके मन में अब तो अकसर पुलिस अंकल का चेहरा छाया रहता। कैसे वे तेज गर्मी में पसीना बहाते हुए चौराहे पर खड़े अपना कर्त्तव्य निभाते हैं। उसने मन ही मन उन्हें कई बार सैल्यूट किया। एक शाम उसे कुछ सूझा। वह टिन्नी को लेकर बाजार गयी और कुछ सामान ले आयी।

अगला दिन रविवार था। मौज–मस्ती का दिन होते हुए भी वह किसी के साथ खेलने के लिए नहीं गयी और अपने कमरे में ही कुछ करती रही। दोनों सहेलियाँ साथ–साथ बाजार चल दी। जैनब के हाथ में थैला था। उसे देखकर नेहा बोली– ''क्या लाना है, जैनब?'' ''आज मैं कुछ देने जा रही हूँ।''

''देने जा रही हूँ! मैं कुछ समझी नहीं।'' नेहा को जैनब कोई जवाब देती उससे पहले ही वे चौराहे पर आ चुकी थी। इस समय शाम के लगभग आठ बज रहे होंगे। अकसर इस समय इस चौराहे पर सड़कें खाली रहती थी। जैनब ने देखा पुलिस अंकल अपने घर जाने की तैयारी कर रहे थे। उनकी ड्यूटी रात आठ बजे तक ही होती थी। वह पुलिस अंकल की ओर बढ़ी तो नेहा ने हाथ पकड़कर रोका– ''अरे कहाँ?''

जैनब ने पुलिस अंकल की ओर इशारा किया तो नेहा ने कहा– ''अरे, पागल हो गयी है क्या? तुझे और तेरे संग मुझे पकड़कर थाने में बन्द कर देंगे। मम्मी कहती हैं पुलिस से दूर रहना चाहिए।'' नेहा की बात सुनकर जैनब को हँसी आ गयी। उसने नेहा के हाथ को अपने दूसरे हाथ से हल्के से हटाते हुए कहा– ''कोई बात नहीं नेहा, आज थाने में ही रह लेंगे।''

जैनब ने थैले में से एक पैकिंग किया गिफ्ट निकाला और पुलिस अंकल की ओर बढ़ाया। ''ये क्या है?'' ''आपके लिए एक छोटा सा गिफ्ट है।'' ''अच्छा। आज पहली बार कोई गिफ्ट मिल रहा है मुझे, और वो भी बच्चों की तरफ से। चलो देखते हैं।'' यह कहकर उन्होंने पैकिंग को खोला तो देखा उसमें तीन लिफाफे रखे थे। ''अरे, इसमें तो केवल लिफाफे रखे हैं!'' उधर नेहा की साँस गले में अटकी हुई थी। वह यह सोच रही थी कि यह पागल जैनब जाने कहाँ फँसवाने ले आयी। पुलिस अंकल ने पहला लिफाफा खोला तो उसमें कुछ कार्ड शीट पर 'प्लीज ट्रेफिक नियमों का पालन करें' ऐसे चित्र बने थे। ''अंकल ये आप चौराहे पर लगा देना ताकि लोग कुछ तो नियमों का पालन करें।'' पुलिस अंकल ने दूसरा लिफाफा खोला तो उसमें दो मास्क रखे थे। ''अरे ये तो किसी ने हाथ से बनाए हैं।'' ''हाँ अंकल, मैंने बनाए हैं। इसीलिए ज्यादा अच्छे नहीं बने। आप जब चौराहे पर खड़े रहोगे तो ये धूल–धुएँ से बचायेंगे।''

तीसरे लिफाफे में एक प्यारा सा ग्रीटिंग कार्ड था। जिस पर चौराहे का चित्र बना था और पुलिस अंकल उसमें अपने ड्यूटी करते दिख रहे थे। उसमें नीचे लिखा था– ''थैंक्यू पुलिस अंकल।'' पुलिस अंकल ने कार्ड खोला। उसमें अन्दर लिखा था– ''प्यारे पुलिस अंकल आप गरमी, सरदी, बरसात में बीच चौराहे पर खड़े होकर जो काम करते हैं। उसके लिए थैंक्यू। हालाँकि सभी लोग आपकी बात नहीं मानते, फिर भी आप रोज अपना काम करते हैं। आपकी ही वजह से हम सब बच्चे अपने घर पहुँच पाते हैं। मैं आपके साथ आपकी मदद तो नहीं कर सकती, लेकिन आपको थैंक्यू तो कह ही सकती हूँ।'' यह पढ़कर पुलिस अंकल ने जैनब की ओर देखा।

जैनब और नेहा दोनों उन्हें सैल्यूट करते हुए बोली– ''थैंक्यू पुलिस अंकल।'' उन्होंने जैनब को एक हाथ से अपनी गोदी में उठा लिया। दूसरे हाथ से अपनी कैप उसके सिर पर सजाते हुए बोले– ''जब तक तुम जैसे समझदार और प्यारे बच्चे इस दुनिया में हैं, तब तक यह दुनिया बहुत अच्छी है। आप खूब पढ़ो, और ऐसे ही प्यारे बने रहो। तुम दोनों को भी थैंक्यू...। और उन्होंने अपनी जेब से दो टॉफिया निकालकर उनके हाथों में थमा दी।

निश्चल
अलीगढ़ (उत्तरप्रदेश)

पढ़ो और जानो

इन प्रश्नों के उत्तर इसी अंक में हैं, आपको उन्हें ढूँढ़ना है।

1. पक्षियों को सर्दी क्यों नहीं लगती?
2. जैनब ने पुलिस अंकल को क्या उपहार में दिया?
3. किस कहानी में अखबार पढ़ने से बच्चों में जागरूकता आई?
4. इस अंक की व्हाट्सएप कहानी का संदेश क्या है?
5. हैंडबॉल की एक टीम में कितने खिलाड़ी होते हैं?
6. जामिया मिलिया इस्लामिया विश्वविद्यालय की स्थापना किसने की?
7. नाटिका में बिजली क्या कहना चाहती है?
8. गौतम बुद्ध ने अपने शिष्य के प्रश्न का कैसे समाधान किया?
9. सोनू और गोलू के बीच क्या समस्या थी?
10. कौन सबसे धनी? इसका फैसला कैसे हुआ?

उत्तरमाला

दस सवाल : दस जवाब

(1) (अ) शनि ग्रह (ब) गेलेक्सी (स) डायमंड रिंग (द) सप्तऋषि तारामंडल (2) 3,84,400 कि.मी. (3) एल्फा सेन्टोरी (4) शनि (Saturn) 82 उपग्रह (5) बड़ा 21 जून, छोटा 22 दिसम्बर (6) 271 दिन 7 घंटे 45 मिनट (7) शुक्र (Venus) (8) वृहस्पति(Jupiter) (9) बुध (Mercury) (10) 76 वर्ष

अन्तर ढूँढ़िए

(1) तितली का आकार छोटा (2) मुर्गे के पैरों का रंग अलग (3) गमले का आकार बड़ा (4) चिड़िया अतिरिक्त (5) मुर्गी के बच्चे की आँख गायब (6) बादल का रंग अलग (7) एक फूल गायब (8) झोपड़ी में खिड़की अतिरिक्त

दिमागी कसरत

(1) रविवार (2) रफ्तार (3) नवरत्न (4) तिरुपति (5) शब्दकोश (6) रणथम्भौर (7) कर्नाटक (8) नमकीन (9) तन्दुरुस्त (10) रत्नाकर (11) तथागत (12) महामहिम (13) नवजीवन (14) मलयालम (15) रविशंकर (16) मरहम (17) पदचाप (18) तबीयत

चित्र पहेली

कान व सिर : 6+1+3+7=17, आँखें : 7+7+5+5 =24, पीठ : 3+1 =4, गरदन : 4+2+2+7+2 =17, मुँह व मूँछे : 8+6+6+4+3 =27, पूँछ 2 + 2 + = 4, अगले पाँव : 1+9+6+1+6+7+1+1+7=39, पिछले पाँव : 6+6+7+8+7+2=36 सभी अंकों का योग 168 है।

बूझो तो जानें

(1) गुलाब (2) गेंदा (3) रात की रानी (4) मोगरा (5) सरसों

वर्ग पहेली

1 ला	ल	2 ब	हा	3 दु	4 र	5 शा	स्त्री
ला	■	या	■	6 ब	त	ख	■
7 ला	8 मा	■	9 ज	ई	■	■	10 गै
11 ज	ला	श	य	■	12 ति	त	ली
प	■	■	13 पु	णे	■	■	लि
14 त	ल	15 वा	र	■	16 पौ	लि	यो
रा	■	म	■	■	लै	■	■
17 य	व	न	■	18 अ	ण्ड	मा	न

सुडोकू

2	5	6	8	3	7	1	4	9
7	1	9	4	2	5	8	3	6
8	4	3	6	1	9	2	5	7
4	6	7	1	5	8	9	2	3
3	9	2	7	6	4	5	1	8
5	8	1	3	9	2	6	7	4
1	7	8	2	4	6	3	9	5
6	3	5	9	7	1	4	8	2
9	2	4	5	8	3	7	6	1

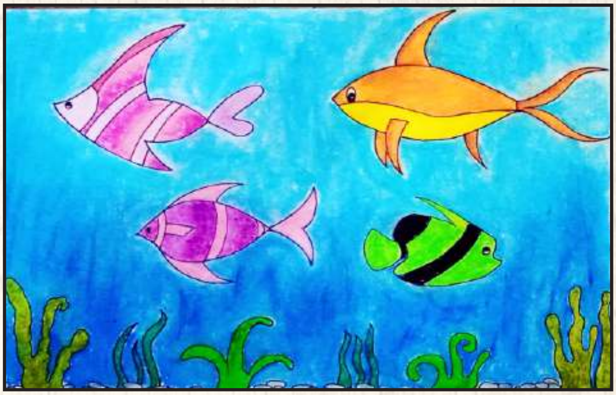

रिद्धि गुंदेचा, कक्षा 6, वसई मुम्बई

मैं हिन्दी हूँ

कवि संत भी कहते जिसको,
वो भाषा, वो बोली हूँ।
जिसके बिना तुम कुछ भी नहीं,
मैं ऐसी रसीली गोली हूँ।

हिन्द धरा पर सबसे पहले,
सबके साथ मैं खेली हूँ।
भारत की तो शान हूँ मैं,
सम्मान से सजी एक टोली हूँ।

इतना प्यार दिया सबने,
माता का एक नाम दिया।
भारत में तो मुझे प्रेम से,
मातृभाषा का सम्मान दिया।
मैं सबके संग रहती हूँ,
मैं सबकी हमजोली हूँ।

रचना सोनी, कक्षा-10, उदयपुर

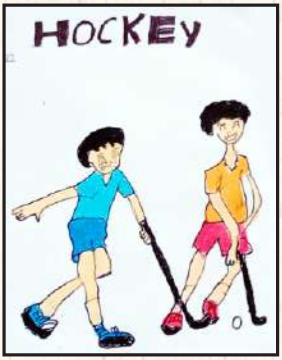

गर्विश जैन, कक्षा 6, भींडर(उदयपुर)

कमलेश कलासुआ, कक्षा 8, वागड़ी

नव्या गुंदेचा, कक्षा 3, वसई मुम्बई

निखिता सिंह, कक्षा-6, मथुरा

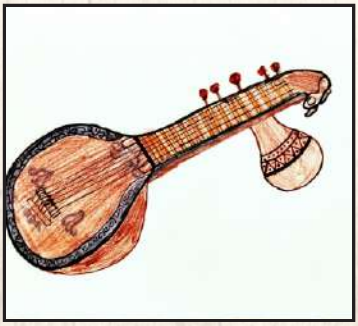

आरवी जैन, कक्षा 3, डूंगरपुर

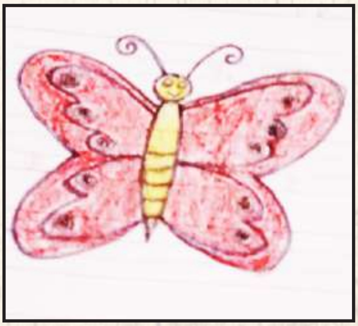

आफिया बानो, कक्षा 2, उदयपुर

शबीस्ता खानम, कक्षा 4, उदयपुर

आप भी अपनी कलम और कूँची का कमाल हमें मोबाइल नं. 9351552651 पर या पत्रिका के पते पर भेजें।

‘महका हर रंग है, आया बसन्त है’

चन्दा ,गणेश, पिंकी ,जयेश, कल्पना, हिना, आकांक्षा

सुशीला

कान्ता, शिवानी, पारु

रीना

आया देखो बसन्त है

फूलों पर है भौंरे छाए,
आमों पर भी बौर हैं आये,
करने ऋतुराज का स्वागत
देखो खेत सरसों के लहराए,
हरियाली का मौसम है ये,
कहते इसे बसन्त हैं,
नई फसल है नई उमंग,
सबके मुख पर नई चमक,
ना सर्द है ना गर्म है,
महका हर रंग है
आया देखो बसन्त है।

दक्षा मीना कुंवर

मैं पढ़ जाऊँगी

वर्णो पर मैं कूदूँगी ,
शब्दों को पढ़ जाऊँगी
वाक्य लहर बनाऊँगी ,
कहानी मैं लिखूँगी ,
सपने मैं बुनूँगी ,
नयी जिंदगी जाऊँगी,
जब मैं पढ़ जाऊँगी,
तो फिर बढ़ जाऊँगी ।

राज्य लक्ष्मी

: सामग्री सौजन्य :

आई.आई.एफ.एल. फाउंडेशन द्वारा गाँवों में संचालित सखियों की बाड़ी केन्द्र पर बसन्त उत्सव मनाया गया जिसमें सराड़ा ब्लॉक की बालिकाओं द्वारा चित्रकारी, कविता लेखन और क्ले से खिलौने बनाये ।

नन्हा अखबार

देश व दुनिया की खबरें जो आप जानना चाहेंगे

नारियल की पत्तियों से स्ट्रॉ

बेंगलुरु के साजी वर्गीज ने नारियल की पत्तियों से स्ट्रॉ तैयार किए। इनका इस्तेमाल जूस और नारियल पानी पीने में किया गया। नारियल के एक पौधे से हर साल 6 पत्तियाँ गिरती है। ग्रामीण क्षेत्रों में इन्हें जला दिया जाता है। इन्होंने पत्तियों को भाप देकर साफ किया। इनसे मोम निकलता है जो स्ट्रॉ को फंगस और पानी से भीगने से बचाने के लिए काम आ सकता है। इस स्ट्रॉ का 6 माह तक इस्तेमाल पानी, मिल्कशेक, सोड़ा और बबल टी को पीने में किया जा सकता है।

दुनिया का सबसे बड़ा ताला

तालों के लिए मशहूर अलीगढ़ के ज्वालापुरी निवासी सत्यप्रकाश ने अपनी पत्नी रूक्मणी के साथ मिलकर विश्व का सबसे बड़ा ताला बनाया है। इस ताले को अयोध्या में बन रहे भगवान श्री राम मंदिर को दंपती द्वारा समर्पित किया जाएगा। उनके अनुसार दो लाख रुपए वाले इस ताले पर रामदरबार की आकृति उकेरी गयी है। ताले को बनाने में करीब 6 माह का समय लगा है। इसका वजन 400 किलो है। लम्बाई दस फीट, चौड़ाई 4.5 फीट व चाबी का वजन 30 किलो है।

हर घर में है एक रसोइया

पुडुचेरी से 30 किमी दूर स्थित कलायूर गाँव में पुरुषों को किचन किंग माना जाता है। करीब 500 सालों से किचन में पुरुषों का ही दबदबा रहा है। गाँव में लगभग 80 घर हैं और प्रत्येक घर में पुरुषों द्वारा खाना बनाना वहाँ की परम्परा का हिस्सा है। गाँव में अनुमानित 200 पुरुष रसोइए हैं। प्रत्येक रसोइया को भी कठोर प्रशिक्षण से गुजरना पड़ता है। गाँव के पुरुषों को सबसे अच्छा रसोइया बनने के लिए 10 साल के प्रशिक्षण की आवश्यकता होती है।प्रत्येक रेसिपी (दक्षिण भारतीय रेसिपी) की जानकारी उन्हें चीफ शेफ द्वारा दी जाती है।

लकड़ी से बनी जुगाड़ की कार

दक्षिण अमरीकी देश वेनुजुएला की राजधानी कराकास में लकड़ी से बनी जुगाड़ कार करूचा पर गली दौड़ की परम्परा एक सदी से भी पुरानी है। सामुदायिक प्रयासों से इसके संरक्षण के लिए बीते दस वर्षों से विशेष प्रयास किए जा रहे हैं। हाल ही में कोविड-19 प्रोटोकॉल का पालन करते हुए एक बार फिर से बच्चों के लिए इस गली दौड़ का आयोजन किया गया। दौड़ में भाग लेकर बच्चों ने खूब

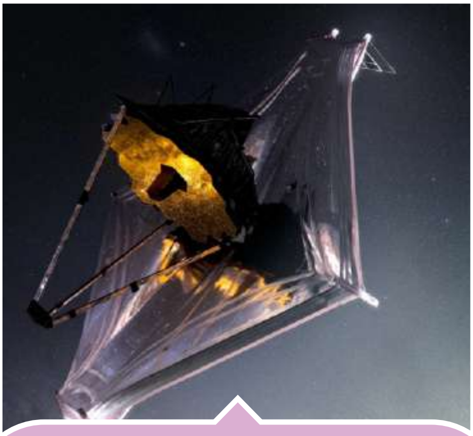

सबसे शक्तिशाली स्पेस टेलिस्कोप लॉन्च

अमेरिकी स्पेस एजेंसी नासा ने अपने नए जेम्स वेब टेलिस्कोप को सफलतापूर्वक लॉन्च कर दिया है। यह अंतरिक्ष विज्ञान के क्षेत्र की बड़ी कामयाबी है क्योंकि जेम्स वेब अत्यधिक दूरी पर मौजूद तारों, ग्रहों, आकाशगंगाओं, ब्लैक होल, उल्कापिंडों की खोज में अहम् भूमिका निभाएगा। हबल टेलिस्कोप की जगह अब जेम्स वेब टेलिस्कोप अन्तरिक्ष से अद्भुत तस्वीरें भेजेगा। फ्रेंच गुयाना स्थित कोराऊ लॉन्च स्टेशन से एरियन-5 ईसीए रॉकेट के माध्यम से इस टेलिस्कोप की लॉन्चिंग की गई। यह धरती से 15 लाख कि.मी. की ऊँचाई पर स्थापित होगा। इसके निर्माण में 10 हजार वैज्ञानिकों ने सहयोग किया है।

दृष्टिबाधित है, मगर खींचती है शानदार फोटो

22 साल की दृष्टिबाधित फोटोग्राफर एसारा इस्माइल को जन्म से दिखाई नहीं देता है। मिस्र के अलेक्जेंड्रिया में समुद्र तट पर लोगों के फोटो खींचती हैं। ये पर्यटकों की आवाज सुनकर उनकी पोजीशन का अन्दाजा लगाती है और शानदार फोटो खींचती हैं।

The Generous Warrior

Great warrior Karna was very generous. He readily parted with his belongings If someone asked for them. Once, Devendra's son Arjun challenged Karna for a fight. But Karna defeated Arjun with ease.

Karna had a divine Armour. None could defeat Karna if he wore it. Arjun's friend, Lord Krishna, knew about this. Krishna wanted Arjun to win the fight between Karna and Arjun in the battle of Mahabharata. So did Devendra.

"You must somehow get Karna to part with his Armour," he said. Devendra assumed the form of a brahmin and went to Karna. Alas! Poor Karna could not make out the treachery and gave his Armour to the brahmin. Thus, Arjun was able to kill Karna in the battle.

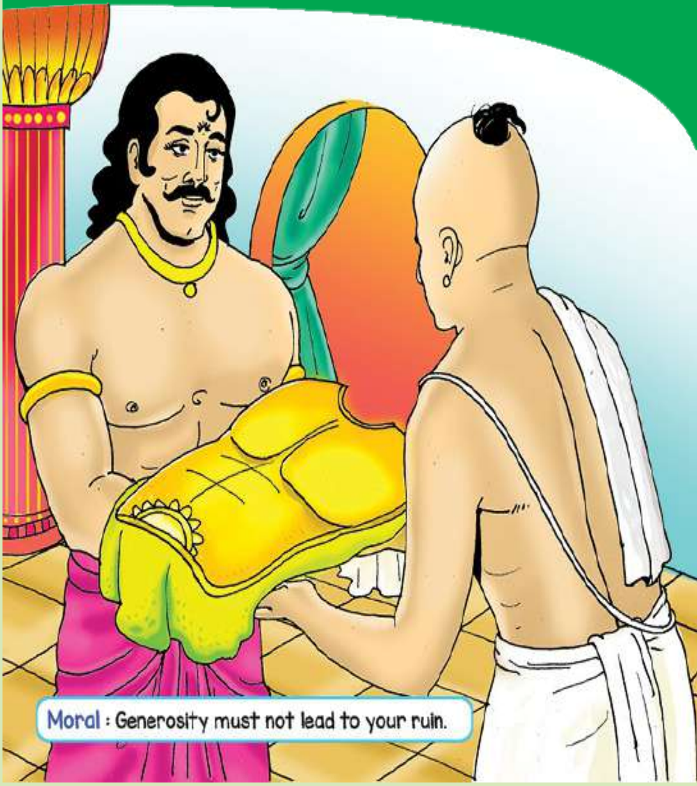

Moral : Generosity must not lead to your ruin.

जन्मदिन की बधाई

2 फरवरी

ओजस्वी
गौरीगंज

4 फरवरी

प्रेक्षा जैन
उदयपुर

6 फरवरी

अयाना ओमर
कानपुर

17 फरवरी

आरोही माहेश्वरी
चित्तौडगढ़

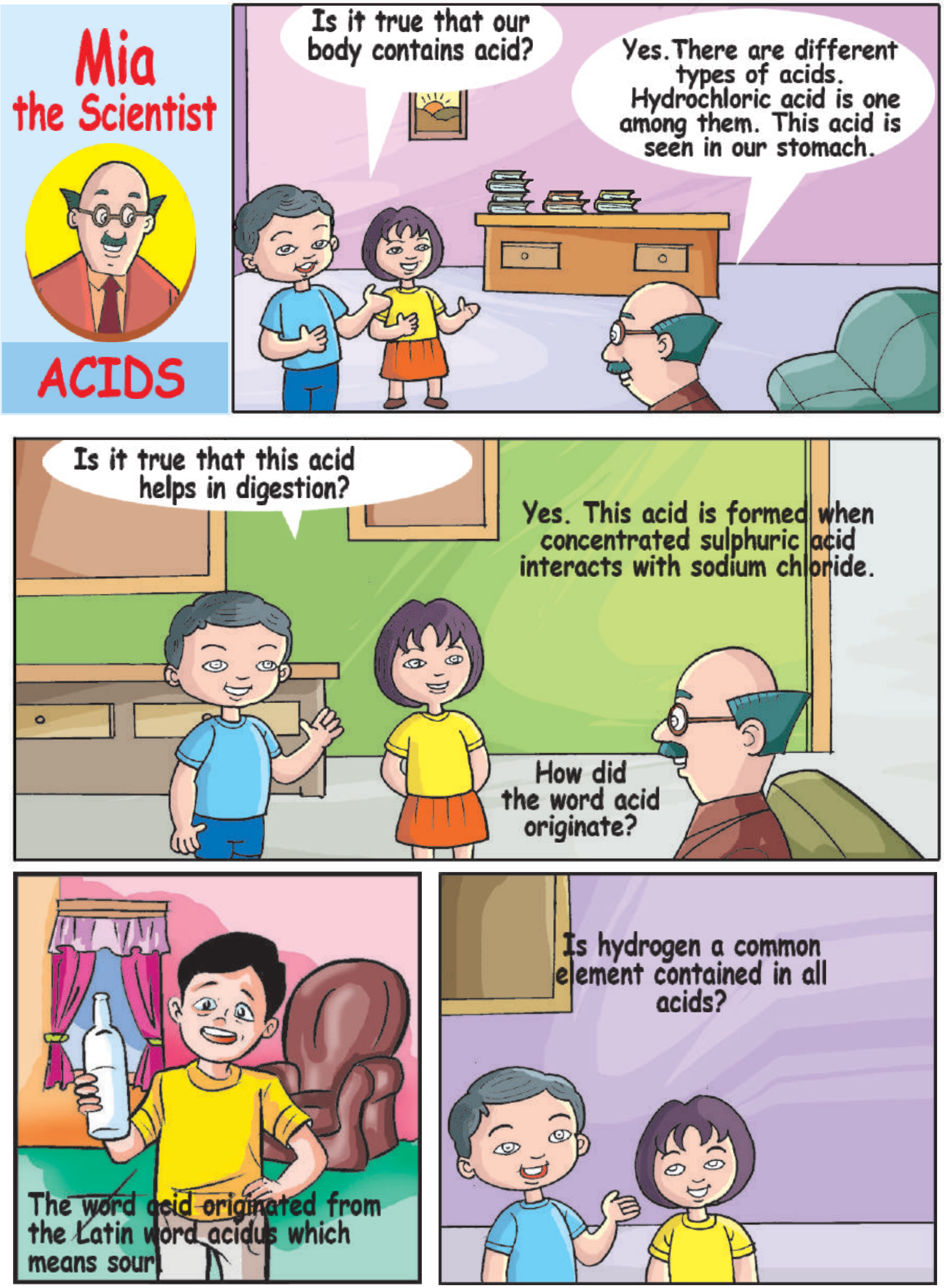
Mia
the Scientist
ACIDS
Is it true that our body contains acid?
Yes. There are different types of acids. Hydrochloric acid is one among them. This acid is seen in our stomach.
Is it true that this acid helps in digestion?
Yes. This acid is formed when concentrated sulphuric acid interacts with sodium chloride.
How did the word acid originate?
The word acid originated from the Latin word acidus which means sour.
Is hydrogen a common element contained in all acids?

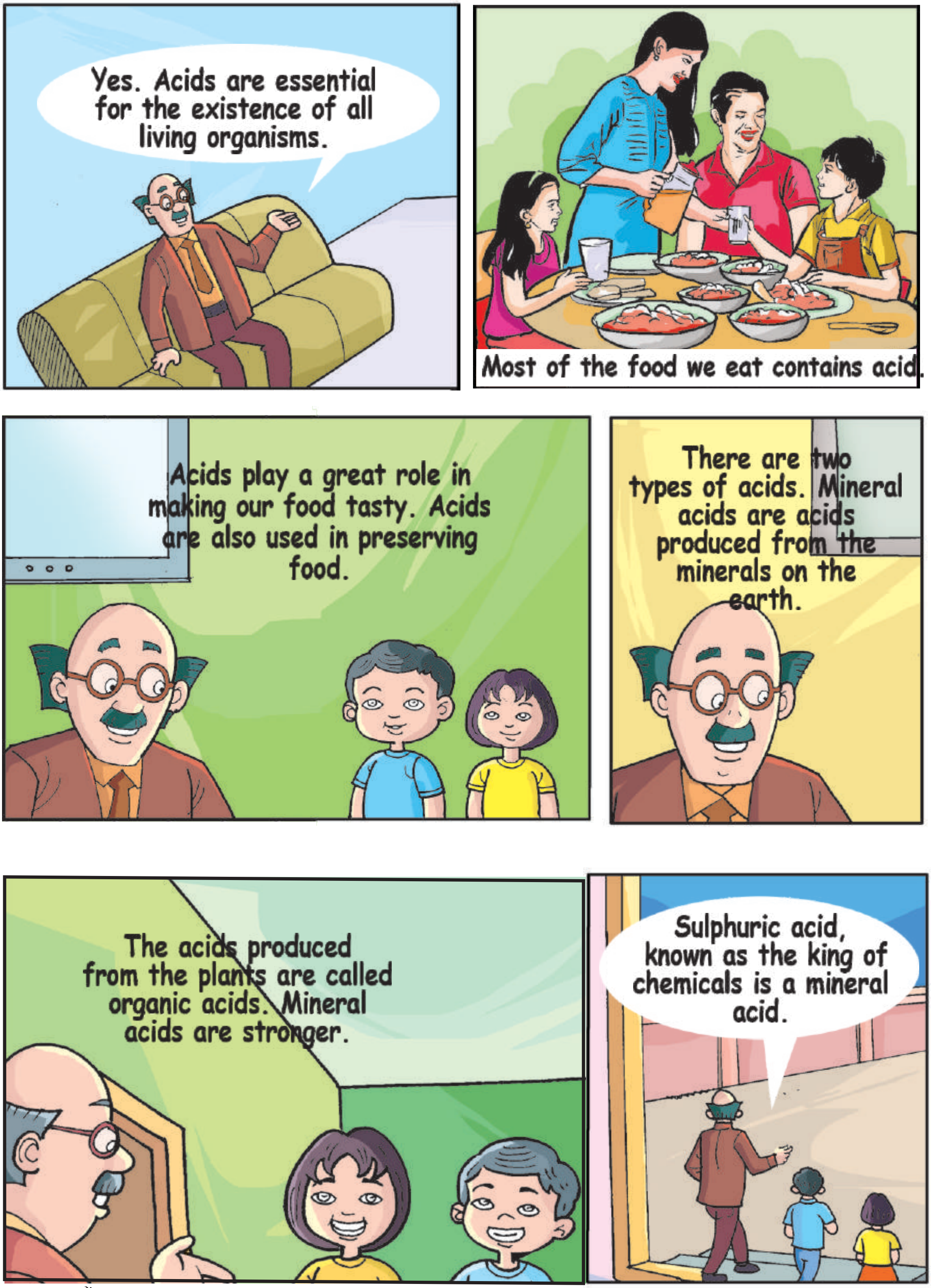
Yes. Acids are essential for the existence of all living organisms.
Most of the food we eat contains acid.
Acids play a great role in making our food tasty. Acids are also used in preserving food.
There are two types of acids. Mineral acids are acids produced from the minerals on the earth.
The acids produced from the plants are called organic acids. Mineral acids are stronger.
Sulphuric acid, known as the king of chemicals is a mineral acid.

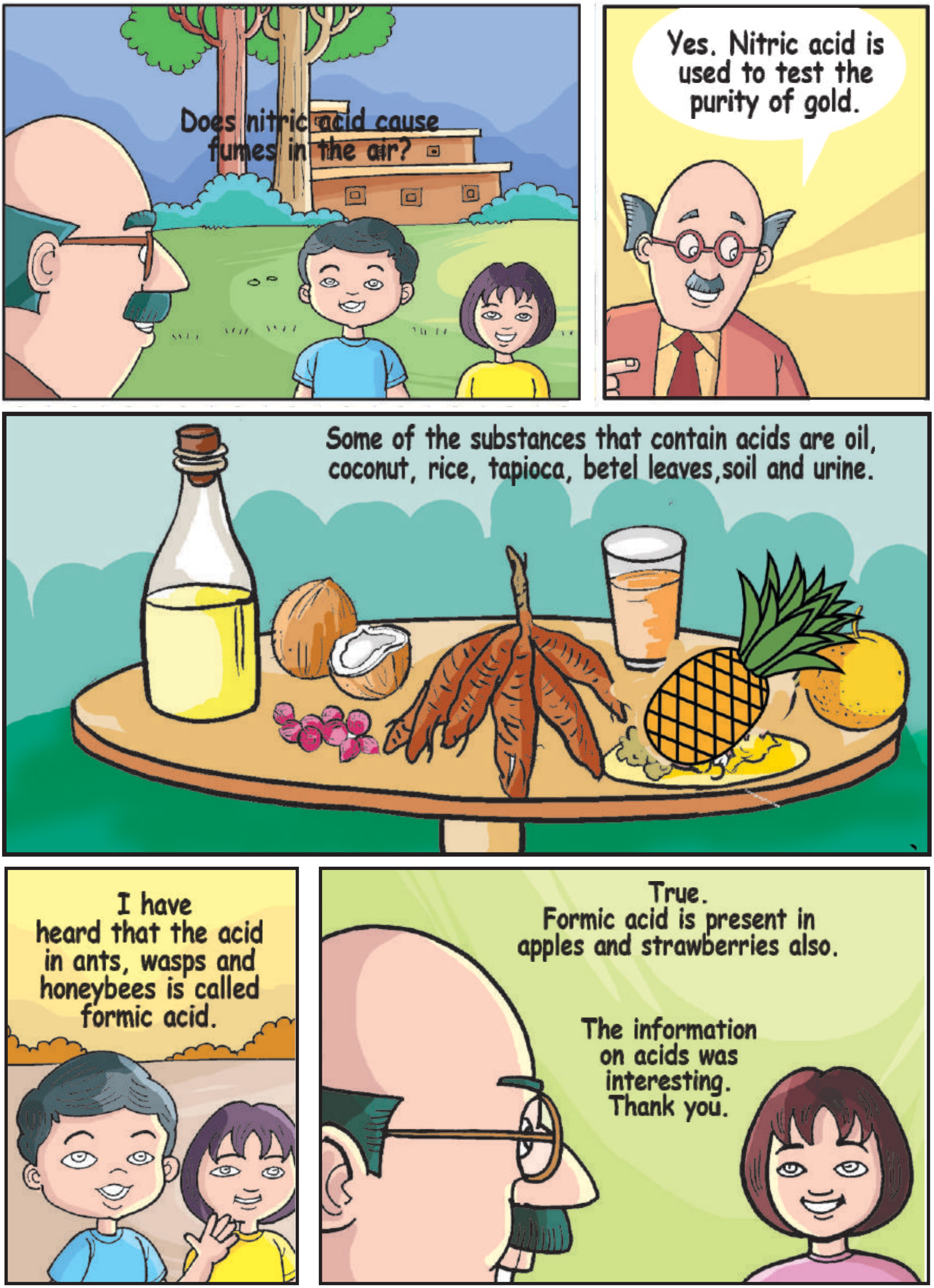
Does nitric acid cause fumes in the air?
Yes. Nitric acid is used to test the purity of gold.
Some of the substances that contain acids are oil, coconut, rice, tapioca, betel leaves,soil and urine.
I have heard that the acid in ants, wasps and honeybees is called formic acid.
True. Formic acid is present in apples and strawberries also.
The information on acids was interesting. Thank you.

Who am I ?

Join the dots from 1 to 20 to see who is hiding here.

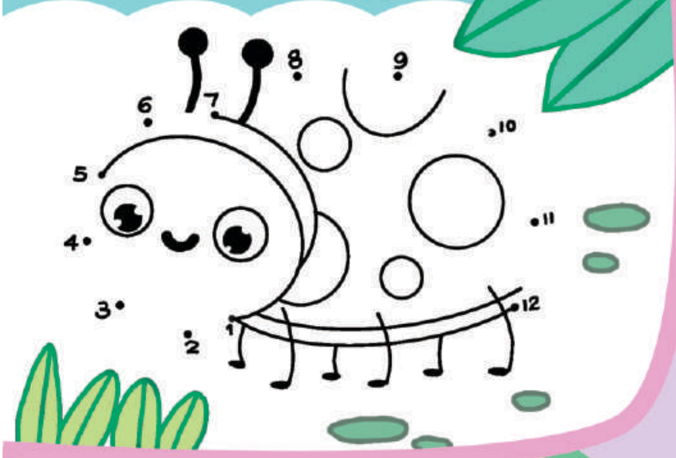

Colourful cars

Colour each car with the colour written below it.

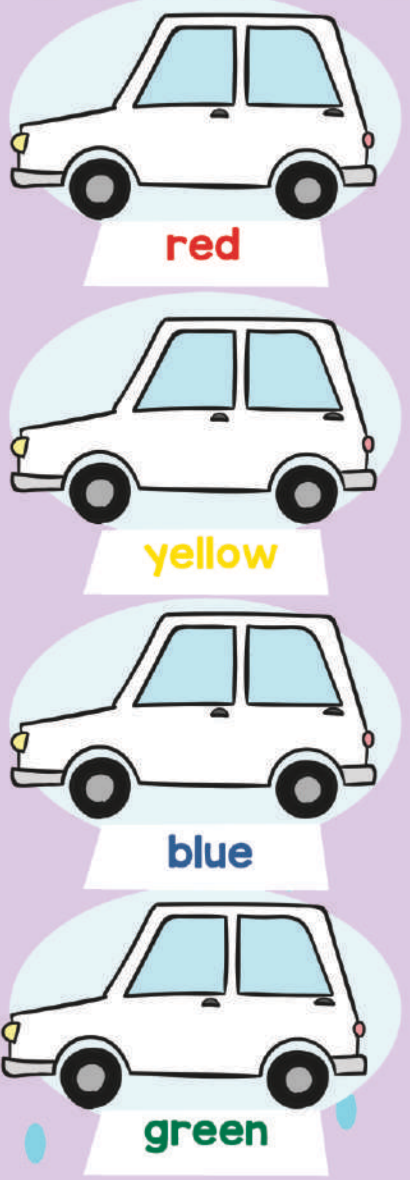

Find the way

Help the cat to reach the fish.

बच्चों का देश द्वारा ऑनलाइन संचालित

बच्चों का क्लब

विधा : ड्राइंग, आर्ट एंड क्राफ्ट

आप भी इस क्लब के सदस्य बनना चाहे तो 9414343100 पर अपना नाम, पता, उम्र, कक्षा, रुचि, पत्रिका का सदस्यता क्रमांक आदि विवरण लिखकर व्हाट्सएप मैसेज करें। इसकी सदस्यता नि:शुल्क है। सदस्यता के लिए आयु सीमा 7 से 15 वर्ष है।

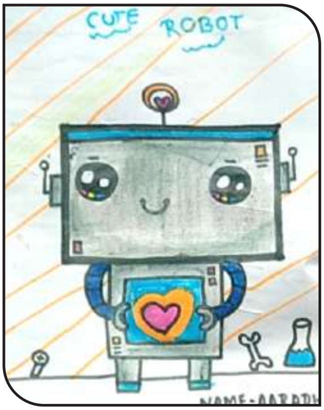

आराध्या माहेश्वरी, कक्षा 4, हापुड़

महक प्रज्ञा बोथरा, कक्षा 7, दिल्ली

पाखी जैन, कक्षा 4, उदयपुर

देवांशी साबू, कक्षा 6, दिल्ली

प्रेक्षा जैन, कक्षा 6, उदयपुर

आयशा लोहिया, कक्षा 6, भीलवाड़ा

भूमि बिष्ट, कक्षा 9, खटीमा(उत्तराखंड)

प्रत्यन्चा शौनक, कक्षा 5, केकड़ी

RNI No. 72125/99
Postal Reg. No.: RJ/UD/29-157/2022-24
Posting Date : 27 & 29
Posted at : Kankroli

सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला'

जन्म : 21 फरवरी, 1899 ■ निधन : 15 अक्टूबर, 1961

बंगाल के मेदिनीपुर में जन्में सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' उत्तर प्रदेश के मूल निवासी थे। आप कोलकाता से प्रकाशित समाचार पत्र समन्वय, मतवाला एवं मासिक पत्रिका सुधा के सम्पादन से जुड़े रहे। आपने कविता, कहानी, उपन्यास आदि विधाओं में प्रचुर मात्रा में साहित्य रचा। आपने कविता में कल्पना का सहारा बहुत कम लिया और यथार्थ को प्रमुखता से स्थान दिया। आपने हिन्दी साहित्य में छन्द मुक्त की कविता को प्रारम्भ किया।

बच्चों का देश
राष्ट्रीय बाल मासिक